mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-1 अंक-10 | पृष्ठ-8 | मूल्य-3 रूपये

मनेन्द्रगढ़

11 जुलाई 2025 शुक्रवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना और मनेन्द्रगढ़ से एक साथ प्रकाशित

नोवाक जोकोविच ने...

@ पेज 7

अमरनाथ यात्रा- 7वें दिन 16,720 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए

पहलगाम ,एजेंसी। अमरनाथ यात्रा के सातवें दिन 18,633 श्रद्धालुओं ने पवित्र गुफा में हिम शिवलिंग के दर्शन किए। यात्रा के शुरुआती हफ्ते में 1.28 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री पवित्र गुफा मंदिर में दर्शन कर चुके हैं। पवित्र अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई को शुरू हुई थी। यह 9 अगस्त तक चलेगी। यात्रा के पहले दिन गुरुवार को 12,348 , शुक्रवार को 14,515, शनिवार को 21,109, रविवार को 21,512 तीर्थयात्री, सोमवार को 23,857 तीर्थयात्री दर्शन के लिए पहुंचे थे। अब तक चार लाख से अधिक लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। यात्रा पर आए श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए 581 अलग-अलग सुरक्षा कंपनियों का चाक-चौबंद बंदोबस्त किया गया है। इसमें सीआरपीएफ, बीएसएफ, एसएसबी, आईबीटीपी और सीआईएसएफ समेत सुरक्षा बलों के जवान तैनात किए गए हैं। बालटाल से लेकर गुफा तक के मार्ग पर हर दो किलोमीटर पर मेडिकल कैंप लगाए हैं। बीच में कई जगहों पर गोदाम भी चालू कर दिए गए हैं। इस साल गुफा की ओर जाने वाले रास्ते पर चार स्टैंड बनाए गए हैं, जबकि पैदल, घोड़े पर और पालकी में जाने वाले श्रद्धालुओं के रास्ते भी अलग-अलग बनाए गए हैं।

बिहार में वोटर लिस्ट रिवीजन जारी रहेगा

पटना ,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को बिहार विधानसभा चुनाव से पहले वोटर लिस्ट के रिवीजन जारी रखने की अनुमति दी। अदालत ने इसे संवैधानिक जिम्मेदारी बताया। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने विशेष गहन पुनरीक्षण (स्ढ्रक्र) यानी वोटर लिस्ट रिवीजन की टाइमिंग पर सवाल उठाए। अदालत ने चुनाव आयोग से कहा कि बिहार में स्ढ्रक्र के दौरान आधार, वोटर आईडी, राशन कार्ड को भी पहचान पत्र माना जाए। बेंच के मुताबिक, 10 विपक्षी दलों के

नेताओं समेत किसी भी याचिकाकर्ता ने चुनाव आयोग की इस प्रक्रिया पर अंतरिम रोक की मांग नहीं की है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाओं पर चुनाव आयोग से 21 जुलाई तक जवाब मांगा। अगली सुनवाई 28 जुलाई के लिए तय की। विशेष गहन पुनरीक्षण यानी वोटर लिस्ट रिवीजन पर अदालत में करीब 3 घंटे सुनवाई हुई। याचिकाकर्ताओं का आरोप है कि वोटर लिस्ट रिवीजन नियमों को दरकिनार कर किया जा रहा है। वोटर की नागरिकता जांची जा रही है। ये कानून के खिलाफ है।

दिल्ली-एनसीआर में बाढ़ के हालात, गाड़ियां तैरीं

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली-हृष्टक्र में बीते 12 घंटे से तेज बारिश जारी है। बुधवार शाम हुई बारिश के बाद दिल्ली और गुरुग्राम की सड़कों पर बाढ़ जैसे हालात हैं। गाड़ियां पानी में तैरती नजर आईं। कई इलाकों में लोग तक पानी में डूब गए। घरों में पानी भर गया है। वहीं उत्तराखंड में बारिश के चलते कई जगहों में लैंडस्लाइड हुई है। रुद्रप्रयाग में बद्रीनाथ रोड पर पहाड़ टूट गया। दिल्ली और गुरुग्राम में आज बारिश का अलर्ट है। बुधवार शाम हुई तेज बारिश के बाद शहर की अधिकतर सड़कों पर पानी भर गया। गुरुग्राम सेक्टर 6 में शीतला माता मंदिर के पास गाड़ियां पानी में तैरती नजर आईं। लोग तक पानी में डूब गए। दिल्ली-गुरुग्राम एक्सप्रेसवे के नरसिंहपुर के नजदीक सर्विस लेन पर 2 फुट तक पानी जमा हो गया। दिल्ली और गुरुग्राम में आज भी बारिश का अलर्ट है।

हरियाणा के शहीद पायलट को अंतिम विदाई

रोहतक ,एजेंसी। अंतिम यात्रा रोहतक में श्मशान घाट पहुंच गई है। लोग जय हिंद के नारे लगा रहे हैं। थोड़ी देर में सैन्य सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। वह कल (9 जुलाई) राजस्थान के चुरू में जगुआर फाइटर जैट क्रैश में को-पायलट समेत शहीद हो गए थे। आज करीब 6 बजे उनकी पार्थिव देह घर पहुंची। जिसके बाद पत्नी डॉ. सुरभि ने एक महीने के बेटे के साथ शहीद पति के अंतिम दर्शन किए। इसके बाद श्मशान घाट में वायुसेना ने उन्हें तिरंगा और कैप सौंपी, जिसे सुरभि ने माथे से लगाया। इससे पहले शहीद के बड़े भाई ज्ञानेंद्र बहन अंशी का हाथ पकड़कर कहते रहे कि लोकेंद्र को स्माइल के साथ अंतिम विदाई देंगे। लोकेंद्र एयरफोर्स में पायलट के तौर पर भर्ती हुए थे, लेकिन अब स्क्वॉड्रन लीडर थे। शादी के साढ़े 4 साल बाद एक महीने पहले ही 10 जून को वह बेटे के पिता बने थे। शहीद होने से पहले उन्होंने वीडियो कॉल पर बेटे का चेहरा देखा था।

थरूर ने इमरजेंसी को काला अध्याय बताया

नई दिल्ली ,एजेंसी। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने एक आर्टिकिल में लिखा कि इमरजेंसी को सिर्फ भारतीय इतिहास के काले अध्याय के रूप में याद नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इससे सबक लेना जरूरी है। उन्होंने नसबंदी अभियान को मनमाना और क्रूर फैसला बताया। थरूर ने मलयालम भाषा के अखबार 'दीपिका' में प्रकाशित आर्टिकल लिखा है। यह गुरुवार को प्रकाशित हुआ है। उन्होंने लिखा कि अनुशासन और व्यवस्था के लिए उठाए गए कदम कई बार ऐसी क्रूरता में बदल जाते हैं, जिन्हें किसी तरह उचित नहीं कहा जा सकता। 50 साल पहले 25 जून, 1975 को तब की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में इमरजेंसी लगाई थी।

महर्षि सांदीपनि की शिक्षा से भगवान श्रीकृष्ण को जगद्गुरु की मिली उपाधि : मुयमंत्री डॉ. यादव

भोपाल ,एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुरू महर्षि सांदीपनि द्वारा प्रदान की गई विद्या से ही भगवान श्रीकृष्ण को विश्व-गुरू की उपाधि मिली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरूवार को गुरु पूर्णिमा पर उज्जैन के महर्षि सांदीपनि आश्रम पहुंचकर भगवान श्रीकृष्ण के गुरु महर्षि सांदीपनि के दर्शन किये और पूजन-अर्चन कर आरती की।

पंडित राजेश जोशी ने पूजा अर्चना संपन्न करवायी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर अति प्राचीन श्री कुंडेश्वर महादेव मंदिर पहुंचकर भगवान के दर्शन भी किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वे पिछले कई वर्षों से लगातार गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सांदीपनि आश्रम आकर दर्शन और पूजा अर्चना करते हैं। महर्षि सांदीपनि आश्रम का अतीत अत्यंत गौरवशाली और अद्वितीय रहा है। आज से लगभग 5000 वर्ष पहले भगवान श्रीकृष्ण, श्री सुदामा और श्री बलराम ने यहां आकर महर्षि सांदीपनि से विद्या ग्रहण की थी। भगवान श्रीकृष्ण ने यहां उनके गुरु महर्षि सांदीपनि व्यास से बहुत कम दिनों में 14 विद्या और 64 कलाओं का अध्ययन किया था।

एक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कैसे हो सकता है, इसका इतिहास इसी सांदीपनि आश्रम में रचा गया था। महर्षि सांदीपनि के द्वारा प्रदान की गई विद्या से ही भगवान श्रीकृष्ण को विश्व गुरु की उपाधि मिली। वर्तमान में भारत फिर अपने गौरवशाली अतीत को प्राप्त कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपनी ओर से सभी को गुरु पूर्णिमा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी।

मुंबई कैंटीन विवाद- फूड डिपार्टमेंट ने लाइसेंस रद्द किया

मुंबई ,एजेंसी। मुंबई के आकाशवाणी विधायक गेस्ट हाउस की कैंटीन में खराब खाने पर फूड डिपार्टमेंट ने लाइसेंस रद्द कर दिया। फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (स्नष्ठ) के अधिकारियों ने कैंटीन से पनीर, चटनी, तेल और दाल के सैंपल लिए हैं। अधिकारी ने बताया कि, इन्हें लैब भेजा जाएगा और रिपोर्ट 14 दिनों में आएगी। तब तक के लिए कैंटीन का लाइसेंस कैंसिल कर दिया गया है। फूड विभाग की तरफ से यह कार्रवाई शिवसेना विधायक संजय गायकवाड़ की शिकायत पर की गई है।

पीरियड्स की जांच के लिए कपड़े उतरवाए

मुंबई ,एजेंसी। महाराष्ट्र के ठाणे के एक प्राइवेट स्ष्ट्रकूल में कक्षा 5 से 10 तक की बच्चियों के कपड़े उतरवाकर चेकिंग की गई। बच्चियों ने अपने पेरेंट्स को बताया कि स्ष्ट्रकूल के टॉयलेट में खून के धब्ष्ब्रे मिले थे। जिसके बाद सभी लड़कियों को कन्ष्ट्रवेंशन हॉल में बुलाया गया और प्रोजेक्ष्ट्रटर पर इसकी तस्ष्ट्रवीरें दिखाई गईं। इसके बाद लड़कियों से पूछा गया कि किस-किस को अभी पीरियड्स हो रहे हैं। जिन लड़कियों ने हां में जवाब दष्ट्रिया,

उनकी उंगलियों के निशान लिए गए। जिन लड़कियों ने न में जवाब दिया, उन्ष्ट्रहें बारी-बारी से टॉयलेट में ले जाकर एक एक के कपड़े उतरवाकर प्राइवेट पार्ट्स की जांच की गई। जब बच्चियों ने ये बात घर जाकर पेरेंट्स को बताई तो पेरेंट्स स्ष्ट्रकूल के बाहर जमा हो गए और हंगामा किया। वे प्रिंसिपल की गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे।

यमन में भारतीय नर्स फांसी केस, सुप्रीम कोर्ट सुनवाई को तैयार

नई दिल्ली ,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट गुरुवार को यमन में मौत की सजा पाई केरल की नर्स निमिषा प्रिया मामले की सुनवाई करने के लिए राजी हो गया है। याचिका में केंद्र सरकार को राजनयिक दखल करने का निर्देश देने की मांग की गई है। जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच इस मामले पर अब 14 जुलाई को सुनवाई करेगा। निमिषा को यमन नागरिक की हत्या के मामले में 16 जुलाई को फांसी दी जाएगी। पिछले साल यमन के राष्टपति राशद अल-अलीमी ने उनकी मौत की सजा को मंजूरी दी थी।

विदेश मंत्रालय के मुताबिक, भारत सरकार मामले पर नजर रखे हुए है और यमन के अधिकारियों और निमिषा के परिवार के साथ लगातार संपर्क में है। निमिषा 2017 से यमन की जेल में बंद हैं। उन पर यमन के नागरिक तलाल अब्दो महदी को दवा की ओवरडोज देकर हत्या करने का आरोप है। निमिषा और महदी यमन में एक प्राइवेट क्लिनिक में पार्टनर थे। आरोप है कि महदी ने निमिषा का पासपोर्ट कब्जे में ले रखा था और उसे प्रताड़ित करता था।

गुजरात का महिसागर पुल हादसा- नदी से 17 शव मिले

अहमदाबाद ,एजेंसी। गुजरात में वडोदरा और आणंद को जोड़ने वाला पुल टूटने के बाद महिसागर नदी से 17 शव निकाले जा चुके हैं। हृष्ठक्रस्न को गुरुवार सुबह 2 और दोपहर में एक और शाम को एक शव मिला, जबकि 13 बॉडी बुधवार को ही बरामद हो चुकी थीं। हादसे में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत हो गई है। अभी भी 2 लोग लापता बताए जा रहे हैं। इनकी तलाश जारी है। महिसागर नदी पर बना ब्रिज बुधवार सुबह टूट गया था। चलते ट्रैफिक के बीच पुल टूट जाने से दो ट्रक, दो कार और एक रिक्शा नदी में गिर गए थे। एक टैंकर टूटे सिरे पर फंस गया था। 45 साल पुराना यह ब्रिज दक्षिण गुजरात को सौराष्ट्र से जोड़ता था। इसके टूटने से भरूच, सूरत, नवसारी, तापी और वलसाड से सौराष्ट्र पहुंचना मुश्किल हो गया है।

सिद्धारमैया बोले- कर्नाटक में मुख्यमंत्री की कोई वैकेंसी नहीं

बेंगलुरु ,एजेंसी। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने एक बार फिर राज्य में ष्टरू बदले जाने की चर्चाओं को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि स्टेट में इस पोस्ट के लिए कोई वैकेंसी नहीं है, क्योंकि वे अभी भी कुर्सी पर बैठे हैं। सिद्धारमैया ने दावा किया है कि वे मुख्यमंत्री के रूप में 5 साल का कार्यकाल पूरा करेंगे। पिछले कुछ समय से कर्नाटक में विधायकों के एक

दल ने डीके शिवकुमार को मुख्यमंत्री बनाने कहा था। जिसके बाद साल के आखिर तक शिवकुमार के कार्यभार संभालने की चर्चाएं जोर पकड़ने लगीं। सिद्धारमैया आज दिल्ली में हैं, जहां वे कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे और सोनिया-राहुल समेत बाकी सीनियर कांग्रेस नेताओं से मिलेंगे। मई 2023 में विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद मुख्यमंत्री पद के लिए सिद्धारमैया और शिवकुमार के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा थी, और कांग्रेस ने बाद में उन्हें मनाने में कामयाबी हासिल की और उन्हें उपमुख्यमंत्री बनाया। उस समय कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि रोटेशनल चीफ मिनिस्टर फॉर्मूले के आधार पर समझौता हो गया था, जिसके मुताबिक शिवकुमार ढाई साल बाद सीएम बनेंगे, लेकिन पार्टी ने आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि नहीं की थी।

कर्नाटक- हासन में 40 दिन में हार्टअटैक से 23 मौतें

बेंगलुरु ,एजेंसी। कर्नाटक के हासन में हार्ट अटैक से मौत के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले 40 दिनों में यहां हार्ट अटैक से 23 मौतें हो चुकी हैं। इनमें से छह की उम्र 19 से 25 साल के बीच थी। वहीं, आठ की उम्र 25 से 45 साल के बीच थी। उधर बेंगलुरु के जयदेव अस्पताल में हार्ट अटैक के मरीजों की संख्या में 8त्न का इजाफा हुआ है। डॉक्टरों ने बताया कि बढ़ते मामलों के बीच हासन और आसपास के जिलों से कई लोग एहतियाती जांच के लिए आ रहे हैं। मैसुरु के भी जयदेव अस्पताल में हार्ट से जुड़ी जांच के लिए रोजाना हजारों लोग पहुंच रहे हैं। डॉक्टर बोले- घबराएं नहीं, खानपान में बदलाव करें जयदेव अस्पताल, मैसूर के मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. केएस सदानंद ने लोगों से घबराने की अपील नहीं की।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश- 2 दिन बाद जांच रिपोर्ट सार्वजनिक होगी

नई दिल्ली ,एजेंसी। अहमदाबाद प्लेन क्रैश की जांच रिपोर्ट 2 दिन बाद सार्वजनिक कर दी जाएगी। मामले की जांच एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो कर रही है। नियमों के मुताबिक, हादसे के 30 दिनों के भीतर रिपोर्ट अपलोड करनी होती है। न्यूज एजेंसी पीटीआई ने सूत्रों के हवाले से इसकी जानकारी दी। एक दिन पहले खबर आई थी प्राइमरी जांच रिपोर्ट केंद्र सरकार को सौंपी है। ये रिपोर्ट शुरुआती जांच में मिले सबूतों और तकनीकी विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई है। हालांकि सूत्रों ने किसी भी तरह की प्राइमरी रिपोर्ट सौंपे जाने से इनकार किया। 12 जून को अहमदाबाद से लंदन जा रही फ्लाइट एआई 171 टेकऑफ के कुछ ही देर बाद एक मेडिकल हॉस्टल की इमारत से टकरा गई थी। इसमें 270 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें 241 यात्री और क्रू मेंबर शामिल थे। सिर्फ एक यात्री इस हादसे में जिंदा बचा है। राज्य मंत्री बोले थे- यह पहली बार, जब दोनों इंजन फेल इससे पहले 28 जून को नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल ने बताया था कि विमान हादसे की जांच सभी पहलुओं से की जा रही है, जिसमें साजिश (सैबोटाज) की आशंका को भी खंगाला जा रहा है। वहीं, तीन महीने में विस्तृत जांच रिपोर्ट आ सकती है।

इंस्टाग्राम में बिना परमिशन वीडियो अपलोड करने वाला यूजर गिरफ्तार

बेंगलुरु ,एजेंसी। बेंगलुरु में एक शख्स बिना परमिशन के सड़कों पर चुपचाप महिलाओं की वीडियो बनाकर इंस्टाग्राम पर अपलोड करता था। अब इस मामले में कार्रवाई हुई है और अकाउंट चलाने वाले शख्स को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी का नाम गुरदीप सिंह है, जिसकी उम्र 26 साल है और वह चक्रपुरम इलाके में रहता है। गुरदीप इंडिया वॉक 1 केएम नाम का इंस्टाग्राम चलाता था। महिलाओं को फैशन के नाम पर बनाया जा रहा था कंटेंट ये इंस्टाग्राम पेज खुद को ट्रैवल और स्ट्रीट फैशन से जुड़ा हुआ बताता है। अकाउंट के बायो में

लिखा है;- हम दुनिया को एक्सप्लोर करते हैं ट्रैवल, लग्जरी कार्स और स्ट्रीट फैशन के जरिए। ये प्लेटफॉर्म इंस्पायर करने के लिए है, इम्प्रेस करने के लिए नहीं- सभी के प्रति सम्मान के साथ।

किशनगंज में जनसंख्या से 1 लाख ज्यादा आधार कार्ड

किशनगंज (बिहार)। बिहार के 4 जिलों में आबादी से ज्यादा आधार कार्ड बनाए गए हैं। किशनगंज, अररिया, कटिहार और पूर्णिया मुस्लिम बाहुल के साथ-साथ पश्चिम बंगाल की बॉर्डर से सटे इलाके हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, किशनगंज की आबादी 20 लाख 26 हजार 541 है, लेकिन यहां 21 लाख 31 हजार 172 आधार कार्ड बनाए जा चुके हैं। मतलब यहां आबादी से 1 लाख अधिक आधार कार्ड बनाए गए। किशनगंज में मुस्लिमों की आबादी 68 फीसदी है। यहां आधार सैचुरेशन 126त्न है यानी कि यहां 100 लोगों पर 126 आधार कार्ड जारी हुए हैं। ऐसा ही हाल कटिहार का है यहां की मुस्लिम आबादी 44 फीसदी है। यहां का आधार सैचुरेशन 123त्न है। मतलब इस जिले में भी 100 लोगों पर 123 आधार कार्ड बनाए गए। बिहार में औसत आधार सैचुरेशन 94त्न है। अररिया में मुस्लिमों की आबादी 43त्न है।

यहां का आधार सैचुरेशन 123त्न है। यहां भी 100 लोगों पर 123 आधार कार्ड बनाए गए। पूर्णिया में भी मुस्लिमों की आबादी 38त्न है, लेकिन यहां आधार सैचुरेशन 121त्न है। ये आंकड़े बताते हैं कि इन जिलों में आबादी से ज्यादा आधार कार्ड बनाए गए हैं। किशनगंज जिले के जियापोखर थाना क्षेत्र के गिलहाबाड़ी गांव में अशराफुल नाम के शख्स को गिरफ्तार किया गया है। अशराफुल पर आरोप है कि वो बांग्लादेशी और नेपाली घुसपैठियों को भारतीय दस्तावेज मुहैया करवाकर आधार कार्ड बनवाता था।

सरकारी स्कूलों में शैक्षिक ओलंपियाड के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले नन्हें ज्ञान वीरों को भी इस बार शैक्षिक ओलंपियाड में भाग लेने का मौका दिया जा रहा है। मध्य प्रदेश के सभी शासकीय प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में यह आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता कक्षा 2 से 8 तक के विद्यार्थियों को देश दुनिया के ज्ञान, इतिहास, भूगोल, संस्कृति और समसामयिक घटनाओं के साथ-साथ हिंदी, अंग्रेजी, विज्ञान और गणित जैसे विषयों से जोड़ने का एक मंच है। इसके लिए 30 जुलाई तक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करने होंगे। यह ओलंपियाड प्रतियोगिता इस साल दो फेस में आयोजित की जाएगी। पहला चरण शिक्षा केंद्र स्तर पर सितंबर महीने में होगा। वहीं, दूसरा चरण जिला स्तर पर नवंबर में होगा। यह बच्चों के लिए न सिर्फ सीखने का मौका होगा, बल्कि उन्हें बड़ी प्रतियोगी परीक्षाओं का शुरुआती अनुभव भी मिलेगा। इस साल की सबसे खास बात यह है कि कक्षा दूसरी से लेकर आठवीं तक के बच्चे अब ओएमआर शीट पर प्रश्नों को हल करेंगे। राज्य शिक्षा केंद्र, स्कूल शिक्षा विभाग ने ओलंपियाड के संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश सभी जिला शिक्षा केंद्रों और स्कूलों को भेज दिए हैं। रजिस्ट्रेशन बच्चे अपने शिक्षकों की मदद से पोर्टल पर 30 जुलाई तक ऑनलाइन कर सकते हैं। शिक्षा केंद्र स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता के बाद, कक्षा 2 और 3 से कुल 28 विद्यार्थी जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चुने जाएंगे। वहीं, कक्षा 6 से 8 में शिक्षा केंद्र स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 36 स्टूडेंट्स का चयन जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए होगा। यह पहल सरकारी स्कूल के बच्चों में सीखने की ललक बढ़ाने और उन्हें प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने के लिए आयोजित की जा रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का जल संसाधन मंत्री सिलावट ने माना आभार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने मंत्रि-परिषद की बैठक में किसान हितैषी निर्णय के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि किसानों की कृषि सिंचाई जलकर राशि में से ब्याज राशि माफ करने का निर्णय ऐतिहासिक और स्वागत योग्य है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के किसानों की कृषि सिंचाई जलकर राशि में से ब्याज राशि (शास्ति दण्ड) माफ करने के निर्णय से प्रदेश के लगभग 35 लाख किसान लाभांवित होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में बुधवार को हुई मंत्रि-परिषद की बैठक में वर्ष 2000 से आज तक के 25 वर्षों में कृषकों पर सिंचाई जलकर की मूल राशि 563 करोड़ 29 लाख रूपये बकाया है। इसमें ब्याज राशि (दण्ड राशि) 84 करोड़ 17 लाख रूपये है। मंत्री श्री सिलावट ने बताया कि प्रदेश में कृषि सिंचाई राजस्व की कारगर वसूली एवं चुनौतियों के समाधान तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति के दृष्टिगत एक अप्रैल 2025 तक की कुल बकाया जलकर राशि एकमुश्त जमा करने की सुविधा दी जाएगी। यदि कृषक बकाया सिंचाई जलकर की मूल राशि एकमुश्त 31 मार्च 2026 तक जमा करते हैं तो अधिरोपित शास्ति (दांडिक ब्याज) की राशि माफ की जायेगी। इसका लाभ उन किसानों को दिया जायेगा जो उन पर बकाया मूल राशि एकमुश्त जमा करेंगे। वित्त विभाग द्वारा इस अल्पकालीन सुविधा पर सहमति दी गई है। जल संसाधन मंत्री ने बताया कि राज्य शासन द्वारा पहले भी कृषकों को दांडिक ब्याज से मुक्ति दी गई थी, जिसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुये तथा शासन को भी एकमुश्त राजस्व राशि प्राप्त हुई थी।वर्तमान में यह सुविधा पुन: दी जाएगी इससे मध्यप्रदेश सरकार को एकमुश्त राजस्व प्राप्ति तो होगी ही बड़ी संख्या में प्रदेश के किसान भी लाभान्वित होंगे।

किरायदारों, पेइंगगेस्ट, होटलों में रूकने वालों की जानकारी पुलिस को देना आवश्यक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पुलिस आयुक्त भोपाल श्री हरिनारायणचारी मिश्र ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए नगरीय क्षेत्र भोपाल शहर में प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए हैं। आदेश अनुसार भोपाल शहर स्थित आवासों में किराये से एवं पेइंगगेस्ट के रूप में रहने वाले व्यक्तियों, होटलों में रहने वाले और आवासरत लोगों के घरों में काम करने वाले नौकर, छात्रावास में रह रहे छात्र-छात्राओं एवं अन्य निवास की जगहों पर रहने वाले व्यक्तियों की जानकारी पुलिस प्रशासन को देना आवश्यक होगा। भोपाल शहर में आने-जाने वाले मुसाफिरों, जो शहर के विभिन्न होटल, लॉज, धर्मशाला, रिजोर्ट, रेस्टहाउस जैसे प्रतिष्ठानों में ठहरते हैं, उनकी जानकारी निर्धारित प्रोफार्मा अनुसार संधारित किया जाना आवश्यक होगा। यह आदेश जारी दिनांक से आगामी दो माह तक प्रभावशील रहेगा। आदेश का उल्लंघन करने पर भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के अंतर्गत कार्यवाही की जाएगी।

आदेश अनुसार कोई भी मकान मालिक जो अपना मकान या उसका कोई भाग किराये पर देते है, तो वह ऐसा करने के एक सप्ताह के भीतर किरायेदार अथवा पेइंगगेस्ट का विवरण निर्धारित प्रारूप में भरकर संबंधित थाने या मध्यप्रदेश पुलिस पोर्टल पर आवश्यक रूप से देंगे। पूर्व से रह रहे किरायेदार या नौकर का विवरण भी निर्धारित प्रारूप में भरकर यह आदेश जारी होने की दिनांक से 15 दिवस के भीतर संबंधित थाने पर या मध्यप्रदेश पुलिस सिटिज़न पोर्टल पर आवश्यक रूप से देंगे। किसी भी व्यक्ति का घरेलू नौकर या उनका सहायक का विवरण निर्धारित प्रारूप में आवश्यक रूप से संबंधित थाने या

मध्यप्रदेश पुलिस सिटिज़न पोर्टल पर देंगे। होटल/ लॉज/ धर्मशाला/रिसोर्ट के प्रबंधक/मालिक उनके यहाँ ठहरने वाले व्यक्तियों का व्यक्तिगत विवरण पूर्ण रूप से रजिस्ट्रर में दर्ज करेंगें एवं इसकी जानकारी निर्धारित प्रारूप में आवश्यक रूप से संबंधित थाने में स्थानीय स्तर पर निर्धारित प्रक्रिया अनुसार देंगे। छात्रावास संचालक छात्रावास में रह रहे छात्र/छात्राओं का विवरण निर्धारित प्रारूप में आवश्यक रूप से संबंधित थाने को देंगे। ठेकेदार/भवन निर्माणकर्ता निर्माण कार्य में लगे मजदूर कारीगरों का विवरण निर्धारित प्रारूप में आवश्यक रूप से संबंधित थाने में देंगे। किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी भी भवन, सार्वजनिक स्थान एवं निजी स्थान पर किसी भी प्रकार के आपत्तिजनक हथियार, अस्त्र शस्त्र, विस्फोटक सामग्री एवं ऐसी किसी भी वस्तु, जिससे जन सामान्य को खतरा महसूस हो का संधारण प्रतिबंधित होगा। यदि किसी समुदाय, संगठन, राजनैतिक दलों, समिति, प्रतिनिधि मंडल एवं आयोजकों द्वारा किसी सार्वजनिक स्थल, शासकीय परिसर, शासकीय कार्यालय / भवन अथवा किसी भी सरकारी संपत्ति को अपने कार्यक्रम में किसी भी प्रकार से क्षति पहुँचाई जाती है, तो इस प्रकार के कृत्यों के लिए कार्यक्रम के आयोजकों की जिम्मेदारी होगी तथा उनके विरूद्ध विधिसम्मत कार्यवाही की जा सकेगी।

प्रकृति के लिए कृतज्ञता का भाव, भारतीय समाज में संस्कारों में है विद्यमान-मंत्री परमार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रकृति के संरक्षण के लिए कृतज्ञता का भाव, भारतीय समाज में संस्कारों में विद्यमान है। हमारे पूर्वजों ने प्राणवायु, जल एवं ऊर्जा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए, समाज में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता रूपी श्रद्धा भाव से परंपराएं स्थापित की। हमारे पूर्वज वृक्षों, जल स्त्रोतों एवं ऊर्जा स्त्रोतों का महत्व जानते थे। वृक्षारोपण, भारत की महानतम परम्परा वसुधैव कुटुंबकम् को आगे बढ़ाने की पहल है। यह न केवल विश्व बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी को बचाने का प्रण है। यह बात उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने बुधवार को भोपाल स्थित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में, एक पेड़ मां के नाम अभियान से अभिप्रेरित विश्वविद्यालय की संकल्पना 6 हजार पौधों के वृहद वृक्षारोपण अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ कर कही। श्री परमार ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर देश भर में चल रहा एक पेड़ मां के नाम अभियान, भारतीय दृष्टिकोण वसुधैव कुटुंबकम् के प्रकटीकरण का महाअभियान है। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि कोविड के संकटकाल में, लोगों ने प्राणवायु (ऑक्सीजन) की महत्ता अनुभव की।

मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी ने लागू की सेल्फ लर्निंग एन्ड एडवांसमेंट पॉलिसी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कम्पनी ने अपने कार्मिकों के सतत् कौशल विकास, ज्ञान संवर्धन एवं शैक्षणिक उन्नयन को बढ़ावा देने के लिये स्व-अध्ययन तथा उन्नति नीति (सेल्फ लर्नि्ंग एन्ड एडवांसमेंट पॉलिसी) लागू की है। इस नीति के अंतर्गत अब सभी अभियंता व कार्मिक अपने नियमित कार्यालयीन कर्तव्यों के साथ-साथ कम्पनी के कार्यक्षेत्र से संबंधित विषयों में पार्ट-टाइम, ऑनलाइन अथवा दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम डिप्लोमा, डिग्री, एमटेक, एमबीए, बीटेक, एलएलबी, एलएलएम,एमसीए व पीएचडी जैसे अनेक शैक्षणिक कार्यक्रम में प्रवेश ले सकेंगे। मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कम्पनी के प्रबंध संचालक मनजीत सिंह ने कहा कि पॉवर जनरेटिंग कंपनी स्वयं को एक लर्निंग ऑर्गेनाइजेशन मानती है। कंपनी अपने कार्मिकों के व्यावसायिक विकास, ज्ञान विस्तार व शैक्षणिक प्रगति के लिए सतत् प्रतिबद्ध है।

सेल्फ लर्निंग एन्ड एडवांसमेंट पॉलिसी लागू होने से पावर जनरेटिंग कंपनी के कार्मिक को दोहरा लाभ होगा। वे अपने कार्यालयीन कार्यों के साथ ऑनलाइन, पार्ट-टाइम व दूरस्थ शिक्षा जैसे विकल्पों के साथ उच्च शिक्षा हासिल कर सकेंगे। इससे कार्मिक के समय और बाहर जाकर अध्ययन करने की समस्या का समाधान होगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए इच्छुक अभियंता व कार्मिकों को मुख्य अभियंता मानव संसाधन एवं प्रशासन को निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत करना होगा। इस नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये अधीक्षण अभियंता प्रशिक्षण को नीति समन्वयक नियुक्त किया गया है। कर्मचारियों को उच्च शिक्षा हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कम्पनी ने पाठ्यक्रम शुल्क का 50 प्रतिशत तक करने का प्रावधान भी रखा गया है। इसकी अधिकतम सीमा 50 हजार रूपए होगी। यह सुविधा केवल मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों व संस्थानों से किए गए अनुमोदित पाठ्यक्रमों के लिए लागू होगी।

हर जिले की चयनित सोसाइटियों का ओरिएंटेशन प्रोग्राम होगा-मंत्री विश्वास सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने हर जिले से पांच चयनित सोसाइटियों का ओरिएंटेशन प्रोग्राम करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने इस प्रोग्राम के माध्यम से सोसाइटियों द्वारा किए गए नवाचार और उनकी विभाग से अपेक्षाओं को जानने को भी कहा है। मंत्री श्री सारंग बुधवार को मंत्रालय में सहकारिता विभाग की समीक्षा कर रहे थे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा है कि लगभग ढाई सौ सोसाइटियों का ओरिएंटेशन प्रोग्राम 50-50 के ग्रुप में करें। उन्होंने कहा कि यह ओरिएंटेशन प्रोग्राम दो दिवसीय हो ताकि उनकी हर एक समस्याओं का समाधान भी हो सके।

मंत्री श्री सारंग ने माइक्रो एटीएम कार्ड रूपे कार्ड को एक माह के अंदर 100त्न वितरित करने को कहा है। उन्होंने कहा कि सहकारिता मंत्रालय की इस पहल को निचले स्तर तक पहुंचाने का भी कम करें। साथ ही नवाचार विंग को पुनर्गठित करें।

मंत्री श्री सारंग ने चीता ब्रांड का लोगो जल्द फाइनल कर लोकार्पित करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने चीता ब्रांड के उत्पाद हितग्राही तक पहुंचाने के लिए एक चेन डेवलप करने को भी कहा। इसके लिए उन्होंने बिजनेस प्लान बनाकर प्रेजेंटेशन देने को भी कहा है और संभागवार समीक्षा बैठक आयोजित करने के भी निर्देश दिए।

इस मौके पर प्रमुख सचिव श्री डीपी आहूजा, विपणन संघ प्रबंध संचालक श्री आलोक कुमार सिंह, आयुक्त एवं पंजीयक श्री मनोज पुष्प, अपेक्स बैंक के प्रबंध संचालक श्री मनोज गुप्ता, उप सचिव सुश्री शीला दाहिमा और मनोज सिन्हा उपस्थित थे।

सड़कों की गुणवा बनाए रखने के लिए ठोस प्रयास : लोक निर्माण मंत्री सिंह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने विभागीय कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु उठाए जा रहे प्रभावी कदमों की जानकारी देते हुए कहा कि लोक निर्माण से लोक कल्याण की अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए विभाग तकनीकी नवाचार, पारदर्शी निरीक्षण प्रणाली और सख्त गुणवत्ता मानकों को अपनाते हुए कार्य कर रहा है। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि इंदौर के पोलोग्राउंड क्षेत्र में निर्माणाधीन रेलवे ओवरब्रिज (आरओबी) का कार्य पूर्णत: स्वीकृत तकनीकी डिज़ाइन और मानकों के अनुरूप प्रगति पर है। यह ओवरब्रिज रेलवे और लोक निर्माण विभाग द्वारा संयुक्त सर्वेक्षण और डिज़ाइन प्रक्रिया के माध्यम से तैयार किया गया है। वर्तमान में निर्माणाधीन इस आरओबी की लंबाई 1027.60 मीटर और चौड़ाई 12.00 मीटर निर्धारित की गई है। इसका डिज़ाइन तीन दिशाओं में यातायात सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। पोलोग्राउंड, लक्ष्मीबाई स्टेशन और भागीरथपुरा की ओर जाने वाली तीन भुजाएँ इसमें सम्मिलित हैं। मंत्री श्री सिंह ने बताया कि ओवरब्रिज में कुल पाँच टर्न (वक्र) हैं, जिनका निर्माण भारतीय सड़क कांग्रेस (द्धक्रष्ट) के दिशा-निर्देशों के अनुसार किया जा रहा है। आईआरसी मानकों के अनुसार कर्व का न्यूनतम रेडियस 15 मीटर होता है, जबकि इस आरओबी के सभी टर्न का रेडियस लगभग 20 मीटर है, जिससे यह डिज़ाइन और संरचनात्मक दृष्टि से पूरी तरह संतुलित और सुरक्षित है। निर्माण कार्य के सभी आयाम – जैसे कि रेडियस ऑफ कर्वेचर, डिज़ाइन स्पीड और सुपर एलीवेशन – को मानकों के अनुरूप सुनिश्चित किया गया है। यह आरओबी इंदौर शहर के तीन प्रमुख क्षेत्रों को यातायात की निर्बाधता और सुविधा के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। निर्माण स्थल की स्थिति और डिज़ाइन ड्रॉइंग का तुलनात्मक अवलोकन इस बात की पुष्टि करता है कि कार्य स्वीकृत तकनीकी योजनाओं के अनुसार ही किया जा रहा है। लोक निर्माण विभाग नागरिकों की सुविधा और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए कार्यों को पारदर्शिता और गुणवत्ता के साथ पूरा कर रहा है। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि गड्ढे रहित सड़कें संधारण विभाग की प्राथमिकता हैं, परंतु अत्यधिक वर्षा और ट्रैफिक लोड के कारण कभी-कभी सड़कों की क्षति होती है।

इनके सुधार कार्य के लिये विभाग तकनीकी प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार कर रहा है।

अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं गुरू: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुरू हमें अज्ञानता के अधंकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। भारतीय संस्कृति में गुरू को ईश्वर के समान माना गया है। गुरू का शिक्षा का प्रकाश ही जीवन को सही दिशा दिखाते हैं। इस दिन शिष्य अपने गुरूओं का पूजन करते हैं, उनके चरण वंदन कर आशीर्वाद लेते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश के सभी जिलों में 10 जुलाई से 2 दिवसीय गुरू पूर्णिमा के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। गुरू पूर्णिमा उत्सव कार्यक्रम में जिले के स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं प्रबुद्ध नागरिकों, गुरूजनों एवं साधु-संतों की भागीदारी रहेगी। गुरू पूर्णिमा का दिन गुरू-शिष्य परंपरा की समृद्ध विरासत के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने दिन का है। प्रदेश में अनेक शिक्षक हैं जिन्होंने अपने उल्लेखनीय कार्य से विद्यार्थियों के साथ समाज में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। मध्यप्रदेश में सिंगरौली की एक शिक्षिका ने अनोखी पहल कर शिक्षा का प्रकाश घर-घर तक पहुँचाया। सिंगरौली के शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैढ़न में पदस्थ माध्यमिक शिक्षिका सुश्री ऊषा दुबेने एक स्कूटी को 'चलती-फिरती लाइब्रेरी' में बदलकर मोहल्लों और गांवों में बच्चों तक किताबें पहुँचाईं। बच्चों ने उन्हें प्यार और आदर से किताबों वाली दीदी कह कर सम्मान दिया। उनके इस अभिनव प्रयास की सराहना स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीअपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में कर चुके हैं। सुश्री ऊषा ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि स्कूलों के बच्चे ताजे कमल के फूल लेकर घर आये, बच्चों की भावना को समझकर उनका भरोसा बनाये रखने के लिए मैने अपने अध्यापन को क्लास-रूम से बाहर निकाल कर चलता-खुश देख कर मुझे बच्चों को निरंतर पढ़ाई से जोड़े रखने के लिये स्कूटी पर चलता-फिरता पुस्तकालय जारी रखने की प्रेरणा मिली।

भानपुर जैन मंदिर में श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, भानपुर में मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज के सान्निध्य में आयोजित श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान में श्रद्धालुओं ने आस्था और भक्ति का अनुपम संगम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रभु पार्श्वनाथ का अभिषेक, शांतिधारा और पंचामृत स्नान के साथ इंद्र-इंद्राणी द्वारा भव्य परिक्रमा की गई। मंगल गीतों और भक्तिरस से ओतप्रोत नृत्य ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। श्रद्धालुओं ने %श्री सिद्ध चक्र का पाठ करो, फल पायो मेना रानी...% जैसे भक्ति गीतों के साथ प्रभु की महिमा का गुणगान किया। मुनिश्री ने प्रवचन में कहा- धर्म का पर्याय है दया। जब तक परिणामों में निर्मलता, भावनाओं में शुद्धि और आत्मा में पवित्रता नहीं होगी, तब तक अनुष्ठान केवल औपचारिक रह जाएंगे। इस धार्मिक आयोजन में मंदिर समिति के अध्यक्ष संदीप जैन 'बंसिया' एवं चातुर्मास समिति अध्यक्ष धर्मचंद जैन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। सभी ने मुनिश्री को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद लिया। प्रवक्ता अंशुल जैन ने जानकारी दी कि अनुष्ठान के प्रमुख पात्रों में वेद भारती, सो धरम, इंद्र-इंद्राणी, जीतेश, आभा, प्रवीण, कुबेर, लीना, मेना सुंदरी, वीरेंद्र, एकता आदि शामिल रहे। सभी ने मंडल पर श्रीफल समर्पित कर अपनी श्रद्धा प्रकट की। धार्मिक अनुष्ठान ब्रह्मचारिणी सविता दीदी व अंकित भैया के निर्देशन में विधिपूर्वक संपन्न हुए। आयोजन के अंत में अध्यक्ष संदीप बंसिया ने बताया कि 12 जुलाई को दोपहर 1 बजे चातुर्मास स्थापना का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर संदीप बंसिया, धर्मचंद जैन, रमेश जैन, श्रीपाल जैन, इंद्र जैन, डब्बू, प्रदीप जैन, वीरेंद्र जैन सहित अन्य श्रद्धालु उपस्थित रहेंगे।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा शासकीय कार्य में बाधा डालने पर दर्ज कराई एफआईआर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा भोपाल वृत्त के अंतर्गत ग्राम अमरावत कलां में शासकीय कार्य में बाधा डालने एवं धमकी देने वाले श्री गजराज के विरूद्ध एफ.आई.आर. दर्ज कराई गई है। ग्राम अमरावत कलां में विजिलेंस चेकिंग के दौरान आरोपी श्री गजराज आत?मज श्री लक्ष्मण सिंह लोधी के द्वारा एलटी पोल से सीधे अतिरिक्त केबल डालकर अपने घरेलू परिसर में बिजली चोरी करते पाए जाने पर कंपनी द्वारा भारतीय न?याय संहिता 2023 की धारा 135 के तहत प्रकरण बनाया गया था। तदुपरांत आरोपी एवं उनके पुत्रों द्वारा सहायक प्रबंधक श्री रूपेश सिंह एवं सहयोगी लाइन स्टाफ पर लाठी से हमला करते हुए जब?त की गई केबल बलपूर्वक ली गई एवं अभद्रतापूर्ण व?यवहार करते हुए शासकीय कार्य में बाधा डाली गई। कंपनी द्वारा आरोपी के विरुद्ध थाना कोलार में प्राथमिकी दर्ज कराई गई। कोलार थाना पुलिस ने भारतीय न?याय संहिता (बीएनएस) 2023 की धारा 352 के अंतर्गत कंपनी द्वारा एफ.आई.आर. दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस पर प्रतिभा सम्मान समारोह व नगर छात्र सम्मेलन आयोजित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) रीवा नगर इकाई द्वारा अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस एवं अभाविप के 77वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिभा सम्मान समारोह और नगर छात्र सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा सांसद श्री जर्नादन मिश्र, विशिष्ट अतिथि उप पुलिस महानिरीक्षक श्री राजेश चंदेल और विशेष अतिथि के रूप में अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के विशेष आमंत्रित सदस्य डॉ. रघुराज किशोर तिवारी उपस्थित रहे।मुख्य अतिथि श्री जर्नादन मिश्र ने अपने संबोधन में कहा कि देश के पुनर्निर्माण में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने छात्रों से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। वहीं, डॉ. रघुराज किशोर तिवारी ने अभाविप के छात्रहित, समाजहित और राष्ट्रहित के लिए निरंतर कार्यों पर प्रकाश डालते हुए संगठन की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।कार्यक्रम के अगले चरण में अभाविप द्वारा पूर्व में आयोजित नगर खेल कुंभ और साप्ताहिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। यह आयोजन छात्रों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने और उनके कौशल को निखारने के उद्देश्य से किया गया।कार्यक्रम के अंतिम चरण में अभाविप के निर्वाचन अधिकारी डॉ. योगेंद्र तिवारी ने वर्ष 2024-25 की कार्यकारिणी को भंग किया और वर्ष 2025-26 के लिए नई कार्यकारिणी की घोषणा की। नई कार्यकारिणी में डॉ. दीपाली शुक्ला को पुनः नगर अध्यक्ष और हर्ष साहू को नगर मंत्री के रूप में निर्वाचित किया गया। इसके अतिरिक्त, आयुष शुक्ला, हर्ष भदौरिया, आयुष विश्वकर्मा, उन्नति सिंह और लव कुमार पांडे को नगर सह-मंत्री, आयुष साकेत को नगर महाविद्यालय प्रमुख, दीपांश गौतम को सह-प्रमुख, श्रेया बघेल को नगर एसएफडी प्रमुख और ओम शुक्ला को सह-प्रमुख के दायित्व सौंपे गए। अन्य दायित्वों की भी घोषणा की गई।कार्यक्रम में जिला संयोजक पी.एन. पांडे, भाग संयोजक पवन द्विवेदी, विभाग छात्रा प्रमुख कृति तिवारी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यह आयोजन अभाविप के राष्ट्रवादी चिंतन और छात्र कल्याण के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल में गुरु पूर्णिमा उत्सव का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल, नागौद में गुरु पूर्णिमा उत्सव बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण के साथ हुई, जिसमें स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती शशि सिंह, प्राचार्य श्री संजीव कुमार श्रीवास्तव, समिति के सचिव श्री विजयपाल सिंह और मध्यप्रदेश योग एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री मनोज प्रताप सिंह ने सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया।कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपने गुरुजनों का तिलक कर, पुष्प अर्पित किए और चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्र-छात्राओं ने गुरु महिमा पर आधारित कविताएँ, भजन, नृत्य और नाटक प्रस्तुत किए, जिससे माहौल भक्तिमय हो गया। शिक्षकों ने अपने अनुभव साझा करते हुए गुरु-शिष्य परंपरा की महत्ता पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को अनुशासन, मेहनत व ईमानदारी का संदेश दिया।प्राचार्य श्री संजीव कुमार श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में कहा, "गुरु का स्थान जीवन में सर्वोच्च है। उनके मार्गदर्शन से ही विद्यार्थी सफलता की ऊँचाइयों को छू सकते हैं।" डायरेक्टर श्रीमती शशि सिंह ने सभी को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएँ देते हुए शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम के अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया और सामूहिक फोटो के साथ यादगार पलों को संजोया गया। यह उत्सव न केवल विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक रहा, बल्कि गुरु-शिष्य संबंधों को और सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हुआ।

तिवनी में गुरु पूर्णिमा पर शिक्षकों व वरिष्ठजनों का सम्मान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर ग्राम पंचायत तिवनी के श्री निवास तिवारी शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में एक भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान गुरुजनों और वरिष्ठजनों को अंगवस्त्र व श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक सम्मानित व्यक्ति को एक-एक पौधा प्रदान किया गया। कार्यक्रम में गुरु-शिष्य परंपरा को जीवंत रखने की दिशा में सार्थक पहल करते हुए सभी वरिष्ठजनों और शिक्षकों का पूजन-अर्चन किया गया। इस अवसर पर मनगवां विधानसभा के विधायक इंजीनियर नरेंद्र प्रजापति, विकास खंड शिक्षा अधिकारी श्री नरेश मिश्रा, जनपद कर्मचारी, कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग के कर्मचारी, भारतीय जनता पार्टी के नेता, मंडल अध्यक्ष, कार्यकर्ता, विद्यालय के छात्र-छात्राएं व अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

शा. महाविद्यालय मड़वास में गुरु पूर्णिमा पर आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। शासकीय महाविद्यालय मड़वास में मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के अंतर्गत त्रैमासिक गतिविधियों के तहत गुरु पूर्णिमा का कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना के साथ हुई, जिसके पश्चात उपस्थित गुरुजनों का पूजन किया गया। मुख्य अतिथि शिक्षक श्री धीरज नामदेव को श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि छात्र का समग्र विकास गुरु के मार्गदर्शन से ही संभव है। डॉ. पूजा गर्ग ने भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा की पीढ़ियों के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. लक्ष्मीकांत कुशवाहा ने गुरु पूर्णिमा के महत्व को रेखांकित किया। प्राचार्य डॉ. आई.पी. प्रजापति ने अध्यक्षीय उद्बोधन में गुरु पूर्णिमा की महत्ता बताते हुए सभी शिक्षकों को शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम में छात्रा कुमारी काजल तिवारी ने गुरु वंदना प्रस्तुत की, जबकि अन्य छात्रों ने भी अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में कुमारी ओमश्री श्रीवास्तव ने प्रथम, पुष्पेंद्र गुप्ता ने द्वितीय और निकिता गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी डॉ. दीपक अग्निहोत्री ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन सहायक नोडल अधिकारी डॉ. आकांक्षा मिश्रा ने किया। इस अवसर पर डॉ. संगीता मिश्रा, डॉ. कमलेश जायसवाल, डॉ. राजेश पटेल, डॉ. रामधारी जायसवाल, डॉ. अनुराग तिवारी, डॉ. पंकज मिश्रा, डॉ. सौरभी गुप्ता, डॉ. ज्योति मौर्या, डॉ. निशा सिंह, डॉ. अमिता खरे, डॉ. संध्या वर्मा, डॉ. सुरेंद्र गुप्ता, प्रो. प्रवीण कुमार, प्रो. बाबा हरिनन्द, श्री सुंदर लाल प्रजापति, श्री अनिल केवट सहित महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

अकैडमिक हाइट्स पब्लिक स्कूल में अभिभावक ओरिएंटेशन कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। अकैडमिक हाइट्स पब्लिक स्कूल, सतना ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 की शुरुआत के अवसर पर श्री रामकृष्ण कॉलेज के सेमिनार हॉल में एक अभिभावक ओरिएंटेशन कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। यह कार्यक्रम कक्षा 1 और 6 के सभी छात्रों के अभिभावकों के साथ-साथ कक्षा 2 से 5 और 7 से 8 में नवप्रवेशी छात्रों के अभिभावकों के लिए आयोजित किया गया।कार्यक्रम में विद्यालय के नियम-कायदों, शैक्षणिक प्रक्रिया, खेल गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं की विस्तृत रूपरेखा अभिभावकों के साथ साझा की गई। विद्यालय के सभी शिक्षकों ने उपस्थित रहकर अभिभावकों को पूरे वर्ष की कार्यप्रणाली से अवगत कराया। मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के डायरेक्टर श्री शाश्वत पूरी, प्राचार्या डॉ. हिमानी सिंह और उप-प्राचार्य श्री संजीव सिंह सेंगर उपस्थित रहे।

विद्यालय प्रशासन ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों को सत्र की शुरुआत में ही सभी आवश्यक जानकारी प्रदान करना था, ताकि वर्ष भर अभिभावकों और विद्यालय के बीच सहज संवाद और सहयोग बना रहे। यह कार्यक्रम अभिभावकों और विद्यालय के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

कलेक्टर ने कंट्रोल रूम में उपस्थित न होने वालों को दिया नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट कार्यालय में बाढ़ आपदा तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं में महत्वपूर्ण सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए जिला स्तरीय कंट्रोल रूम बनाया गया है। कंट्रोल रूम में 24 घंटे अधिकारी और कर्मचारी तैनात किए गए हैं। कंट्रोल रूम में तैनात होने के आदेश का उल्लंघन करने पर कलेक्टर प्रतिभा पाल ने 6 कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस दिया है। इनके द्वारा कंट्रोल रूम में उपस्थिति न देकर आदेश की अवहेलना करने तथा पदीय दायित्वों के निर्वहन में लापरवाही बरतने पर मध्यप्रदेश सिविल सेवा वर्गीकरण नियंत्रण एवं अपील नियम 1966 के तहत नोटिस दिया गया है। कलेक्टर ने सहायक मानचित्रकार घनश्याम शुक्ला, सहायक ग्रेड तीन पवन चौधरी, फोटोकॉपियर रामचन्द्र प्रसाद, चैनमैन चन्द्रमणि सेन, सहायक वर्ग तीन मयंक पटेल तथा अनुरेखक कृष्णधर द्विवेदी को कारण बताओ नोटिस दिया है। नोटिस का संतोषजनक उत्तर न देने तथा 24 घंटे की समय सीमा में उपस्थित न होने पर एक पय कार्यवाही की जाएगी।

रीवा को हराभरा बनाने के लिये होगा वृक्षारोपण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा को शहर को हराभरा बनाने के लिये वृहद वृक्षारोपण किया जा रहा है। शहर में विभिन्न रिक्त भूमियों में वृहद पैमाने पर तथा सड़कों के किनारे वृक्षारोपण कार्य किया जा रहा है। पशु चिकित्सा महाविद्यालय के पीछे नदी के किनारे रिक्त भूमि में 40 हजार पौधे लगाये जायेंगे। कलेक्टर प्रतिभा पाल स्थल निरीक्षण किया तथा सभी तैयारियों पूर्ण करने के निर्देश दिये।

स्थल निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने निर्देशित किया कि भूमि के समतलीकरण के पश्चात गढ्ढे खोदकर सभी आवश्यक तैयारियों सुनिश्चित करें तथा वृहद वृक्षारोपण के उपरांत इसकी सुरक्षा की भी व्यवस्था करें। उन्होंने बनिया तालाब के किनारे वृक्षारोपण की कार्ययोजना बनाकर समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। इस दौरान आयुक्त नगर निगम डॉ. सौरभ सोनवणे, एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, तहसीलदार शिवशंकर शुक्ल सहित नगर निगम के अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने 6 अधिकारियों को दिया नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत चिन्हित सेवाएं समय सीमा में उपलब्ध न कराने पर 6 अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस दिया है। नोटिस का तीन दिवस में संतोषजनक उत्तर प्राप्त न होने पर अर्थदण्ड की कार्यवाही की जाएगी। कलेक्टर ने सीएमओ गोविंदगढ़ को जन्म प्रमाण पत्र न देने तथा सिविल सर्जन डॉ प्रतिभा मिश्रा को आवेदक की आयु का चिकित्सकीय सत्यापन न करने पर नोटिस दिया है। कलेक्टर ने सीएमओ सेमरिया सुषमा मिश्रा को समय सीमा में विवाह पंजीयन प्रमाण पत्र जारी न करने तथा सीएमओ त्योंथर अजय कुमार पाण्डेय को राष्ट्रीय परिवार सहायता राशि जारी न करने पर नोटिस दिया है। जेई शीया तिवारी को मीटर संबंधी शिकायत का निराकरण न करने तथा सीएमओ मनगवां हेमंत त्रिपाठी को समय पर नल कनेक्शन न देने पर नोटिस दिया है।

जिले में अब तक 171.6 मिलीमीटर वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में एक जून से अब तक 171.6 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की जा चुकी है। इस संबंध में अधीक्षक भू-अभिलेख महेन्द्र वास्तव ने बताया कि अब तक तहसील हुजूर में 192.8 मिलीमीटर, रायपुर कर्चुलियान में 127.5 मिलीमीटर, गुढ़ में 296 मिलीमीटर, सिरमौर में 224.2 मिलीमीटर, त्योंथर में 67 मिलीमीटर, सेमरिया में 175 मिलीमीटर हुई।

गुरु पूर्णिमा पर सिन्धु विकास समिति ने लिया संतों का आशीर्वाद

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सिन्धु विकास समिति परिवार ने प्रातःकाल अखिल भारतीय सिंधु संत समाज के संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान समिति ने संतों को शाल और श्रीफल भेंटकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा और सम्मान व्यक्त किया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय सिंधु संत समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत स्वामी खिम्यादास जी (संत मोतीराम आश्रम), महंत स्वामी ईश्वरदास उदासीन जी (श्री संतधाम), महंत स्वामी संतोख दास जी (श्री मनोहर धाम), महंत स्वामी पुरुषोत्तम दास जी (बाबा मेहरशाह दरबार), श्री योगी गुरु रुद्रनाथ जी (सिद्ध पाढ़ी नाथ मंदिर), और साईं किशोर लाल जी (संत कंवर राम धाम) का सम्मान किया गया। सिन्धु विकास समिति विगत कई वर्षों से शहर में सेवा, समरसता, एकता और विकास के संकल्प के साथ सामाजिक कार्यों में सक्रिय है। समिति द्वारा रक्तदान सेवा, श्री नारायण मुक्तिधाम का निर्माण, रक्तवीरों, डॉक्टरों, शिक्षकों और गुरुजनों का सम्मान जैसे कार्य विशेष रूप से किए जाते हैं।

इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष भाई प्रह्लाद जी, मार्गदर्शक श्री विनोद गेलानी, समाजसेवी श्री गोपीचंद कापड़ी, मंत्री श्री किशनचंद वाधवानी, प्रचार मंत्री श्री संजय वाधवानी, मीडिया प्रभारी श्री रंजीत सेनानी, कार्यकारिणी सदस्य श्री अमित कामरानी, श्री दीपक वाधवानी, श्री बसंत खत्री, श्री बंसी नागदेव, श्री मनोहर मोरियानी, श्री अर्जुनदास बजाज, श्री शंकर वाधवानी, श्री जयंत हासवानी, श्री हीरा सोनी, श्री कन्हैयालाल कामदार, श्री सागर जसवानी, श्री श्रीचंद शीतलानी सहित कई समाजसेवी उपस्थित रहे।

भाजपा रीवा द्वारा गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर किया गया गुरु पूजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर विभिन्न मंदिरों,आश्रमों पर भाजपा जिलाध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता के नेतृत्व में एवं जनेन्द्र मिश्रा एवं राजेश सिंह के संयोजन में श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत गुरु पूजन कार्यक्रम किये गए । इस अवसर पर पार्टी के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने विभिन्न मंदिरों,आश्रमों शैक्षणिक संस्थानों पर जाकर गुरुजनों का सम्मान और पूजन किया।

गुरु पूर्णिमा का यह विशेष दिन भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा के महत्व को दर्शाता है। इसी परंपरा का निर्वहन करते हुए, भाजपा रीवा के कार्यकर्ताओं ने शहर के विभिन्न आश्रमों, शिक्षण संस्थानों और मंदिरों में जाकर विद्वान गुरुओं, संतों और शिक्षकों का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान, उन पर पुष्पवर्षा की गई, शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया और उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना की गई।

कार्यक्रम में उपस्थित भाजपा नेताओं ने गुरु पूर्णिमा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरु हमें अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाते हैं और जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं। इस अवसर पर, भाजपा रीवा के वरिष्ठ नेता कमलेश्वर सिंह ने स–ुरु कबीर संस्थान में महंत श्री सनाथ साहेब जी का सम्मान किया और कहा, "गुरु पूर्णिमा का यह पर्व हमें अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर देता है। भाजपा सदैव भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है और आज का यह कार्यक्रम इसी दिशा में एक छोटा सा प्रयास है।"

पूर्व जिलाध्यक्ष विद्याप्रकाश श्रीवास्तव ने श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर के प्रधान पुजारी श्री रामलाल शास्त्री जी का सम्मान किया,भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश कार्यसमिति सदस्य हिमांशु कौशल गुप्ता ने प्राचीन मुकाती मंदिर जाकर महंत श्री दीनानाथ शास्त्री जी का सम्मान किया ! उक्त अवसर पर भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ के जिला सह संयोजक द्वय संजीव गुप्त एवं प्रकाश गुप्त ने पुष्प वर्षा कर गुरुजन का सम्मान एवं आशीर्वाद प्राप्त किया !

विचार

सुंदर दिखने मौत को गले लगाते युवा

वर्तमान समाज में सुंदरता की परिभाषा इतनी विकृत हो चुकी है। युवा वर्ग अपने जीवन को दांव पर लगाने में भी संकोच नहीं कर रहा है। अभिनेता शेखर सुमन के बेटे अध्ययन सुमन की प्रेमिका दिवंगत अभिनेत्री सैफाली की असामयिक मृत्यु ने इस विकृत मानसिकता पर हम सभी का ध्यान खींचा है। आज के दौर में खूबसूरत दिखना एक बड़ी मानसिक बीमारी बन गई है। जीवन जीने के लिए सुंदर शरीर का होना जरूरी है? इसको लेकर एक नई मानसिकता युवा वर्ग में देखने को मिल रही है। शरीर की फिटनेस, ग्लोइंग स्किन, परफेक्ट फिगर, इंस्टाग्राम-रेडी चेहरा जैसी सोच ओर मान्यताएं युवा वर्ग, जिसमें लड़के और लड़की दोनों हैं, इस सोच के शिकार हैं। अधेड़ उम्र में यह मानसिकता और भी खतरनाक हो जाती है। जब धीरे-धीरे उम्र का असर शरीर पर दिखने लगता है। अधेड़ वर्ग कुंठा का शिकार होने लगाता है। युवाओं में सोशल मीडिया की दिखावटी दुनिया ने सुंदरता के मायने शक्ल-सूरत ड्रेस और बाहरी सौंदर्य तक सीमित कर दिया है। वर्तमान पीढ़ी में आत्म मूल्यांकन का आधार विचार, व्यवहार या ज्ञान नहीं, बल्कि शरीर का सौंदर्य और पहनावा स्टेटस सिम्बल बन गया है। स्किन-फेयरनेस क्रीम, बोटॉक्स, सर्जरी, डाइटिंग, स्टेरॉयड और महंगे कॉस्मेटिक ट्रीटमेंट जैसे रसायनों के पीछे भाग रहे है। युवा, अधेड न केवल अपनी असल पहचान खो बैठते हैं, बल्कि धीरे-धीरे मानसिक बीमार बनाकर अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। अब तो हद हो गई है जब युवा और अधेड़ आत्महत्या जैसे कृत्य करने लगे हैं। सुंदर दिखने और फैशन की इस होड़ ने युवाओं के आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान को खोखला कर दिया है। बॉलीवुड से लेकर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के बाद यह बीमारी अब समाज के मध्यम एवं निम्न वर्ग तक तेजी के साथ फैलती चली जा रही है। सभी नकली और अवास्तविक सौंदर्य मानक के साथ जीने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए जिस तरह का वह कृत्रिम उपाय अपना रहे हैं। उसके कारण वह कुंठा, मानसिक बीमारी के कारण असमय मौत के मुंह में भी समा रहे हैं। युवा-युवतियों के मन में तेजी के साथ हीन भावना और असुरक्षा जन्म लेती है। जब अवास्तविक सोच ओर अपेक्षाओं को वह पूरा नहीं कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में निराशा से भरे हुए लोग आत्महत्या जैसे खतरनाक कदम तक उठा लेते हैं। युवा और अधेड़ जिस तरह से कृत्रिम साधनों का उपयोग दैनिक जीवन में कर रहे हैं। उसके कारण उनके शरीर में इसके घातक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। कृत्रिम उपाय के दुष्प्रभाव से उनकी समय के पहले मौत हो जाती है। इस स्थिति को लेकर डॉक्टर भी चिंता करने लगे हैं। सुंदर दिखने की ललक और फैशन हर तरीके के जोखिम को उठाने के लिए लोगों को मजबूर कर रही है। सुंदरता केवल शरीर और चेहरे मोहरे तक सीमित नहीं है। समाज में व्यक्ति की पहचान उसके गुणों, ज्ञान, उपयोगता और उसकी कलाओं के आधार पर होती है।

बाहरी आकर्षण कुछ समय के लिए लोगों को आकर्षित कर सकता है। वास्तविक ज्ञान, गुण और कला सम्पूर्ण जीवन की वास्तविक चमक है। अभिभावकों, शिक्षकों और समाज को कृत्रिम सुंदरता और कृत्रिम ज्ञान फैशन के स्थान पर वास्तविक स्वरूप का ज्ञान बच्चों को बचपन से देना होगा। किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके आत्म विश्वास, संवेदना, ईमानदारी और चरित्र से बनती हैं। वास्तविकता सारे जीवन काम आती है। भौतिक संसाधनों एवं बाजारवाद की मानसिक बीमारी को समय रहते नहीं रोका गया, तो अगली पीढ़ी एक ऐसे भंवरजाल में फंस जाएगी। जहां से निकल पाना उसके लिये संभव नहीं होगा। जिस तरह से वर्तमान समय में युवा और अधेड़ कृत्रिम संसाधनों के माध्यम से अपने आपको हमेशा युवा होना तय सबसे सुंदर दिखाना चाहते हैं। कुछ समय के लिए तो यह संभव हो सकता है। उसके बाद सारा जीवन कष्ट मय होना तय है। कृत्रिम सौंदर्य और कृत्रिम ज्ञान की कोई वास्तविकता नहीं होती है। जिसके कारण सामान्य जीवन कठिन होता चला जा रहा था। एक बहुत बड़ी आबादी कुंठा एवं मानसिक बीमारी से ग्रसित हो चुकी है। जो मन एवं शरीर को बीमारी बना रहा है। इससे बचने का प्रयास सभी को करना चाहिए।

17 देशों की संसदों में संबोधन, 27 देशों से सर्वोच्च समान, विश्व मंच पर मोदी का जादू बरकरार

नीरज कुमार दुबे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और वैश्विक नेतृत्व के क्षेत्र में भारत को एक नई ऊँचाई पर पहुंचा दिया है। जहां एक ओर उन्होंने अब तक 17 देशों की संसदों को संबोधित कर भारत की आवाज़ को विश्वमंच पर मुखर किया है, वहीं दूसरी ओर 27 देशों से प्राप्त सर्वोच्च नागरिक समानों ने उन्हें दुनिया के सबसे समानित और प्रभावशाली नेताओं में स्थान दिला दिया है। यह उपलधियाँ केवल व्यक्तिगत समान नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक स्थिति की उन्नति का प्रतिबिंब हैं। प्रधानमंत्री मोदी का संसदों में संबोधन केवल भाषण नहीं, बल्कि रणनीतिक कूटनीति का हिस्सा है। उन्होंने विकसित और विकासशील देशों, दोनों के विधायी मंचों पर भारत की लोकतांत्रिक विरासत, आर्थिक दृष्टि और वैश्विक सहयोग की भावना को साझा किया।

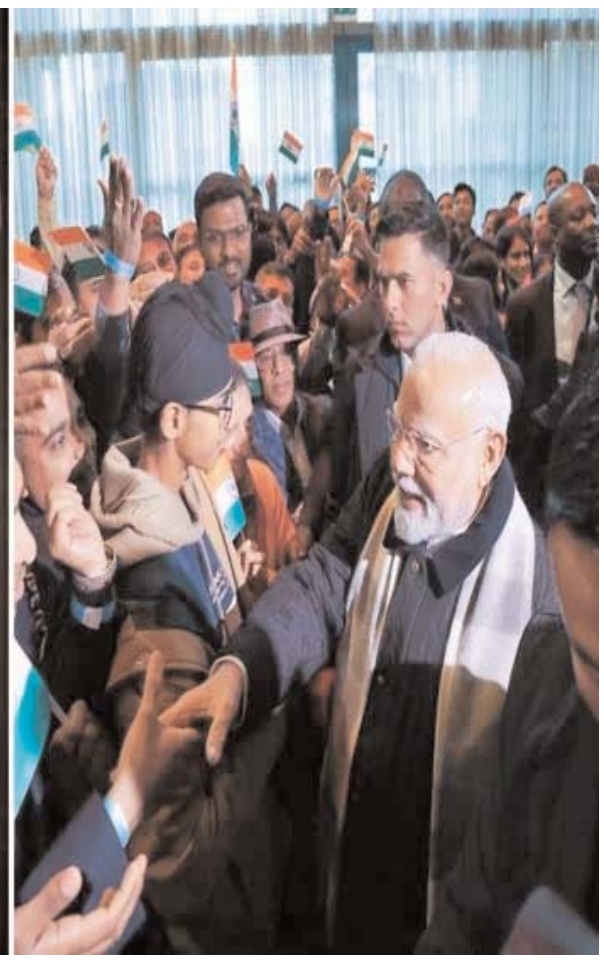

मोदी की ओर से अन्य देशों की संसदों में दिये गये संबोधन को याद करें तो उन्होंने 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद ऑस्ट्रेलिया, फिजी, भूटान, नेपाल की संसदों को संबोधित किया। साल 2015 में प्रधानमंत्री ने ब्रिटेन, श्रीलंका, मंगोलिया, अफगानिस्तान और मॉरीशस की संसद को संबोधित किया। साल 2016 में उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया। 2018 में प्रधानमंत्री ने युगांडा और 2019 में मालदीव की संसद में अपना संबोधन दिया। 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने दूसरी बार अमेरिकी कांग्रेस में अपना संबोधन दिया और इसके साथ ही वह उन कुछ चुनिंदा वैश्विक हस्तियों में शुमार हो गये जिन्हें दो बार अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करने का गौरव हासिल हुआ है। इसके बाद प्रधानमंत्री ने 2024 में गुयाना और 2025 में घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो तथा नामीबिया की संसद को संबोधित किया। खास बात यह है कि 2025 में तीन देशों की संसदों में प्रधानमंत्री का संबोधन एक सप्ताह के भीतर हुआ है जोकि अपने आप में एक और कीर्तिमान है। इन सभी संबोधनों में भारत ने ग्लोबल साउथ, संयुक्त राष्ट्र सुधार, आतंकवाद विरोध, जलवायु न्याय और डिजिटल समावेशन जैसे मुद्दों पर स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

साथ ही प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति पारंपरिक 'गुटनिरपेक्षता' से आगे जाकर बहुध्रुवीय मित्रता पर आधारित है। उन्होंने पश्चिमी शक्तियों से रिश्ते गहरे किए, लेकिन साथ ही अफ्रीका, मध्य एशिया, खाड़ी देशों और दक्षिण अमेरिका में नए रणनीतिक संबंध भी बनाए। मोदी की यह अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि भारत की उभरती शक्ति, विचारधारा और नेतृत्व क्षमता की स्वीकार्यता है। उनका हर संसद में दिया गया संबोधन, हर प्राप्त सम्मान, भारत की लोकतांत्रिक आत्मा, विकासशील दृष्टिकोण और नैतिक शक्ति का प्रतीक है। साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 17 देशों की संसदों को संबोधित करना और 27 देशों से सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करना, भारतीय विदेश नीति के इतिहास में एक अभूतपूर्व अध्याय है। यह दर्शाता है कि आज का भारत केवल सुनने वाला नहीं, बल्कि दुनिया को दिशा देने वाला देश बन चुका है। यह उपलब्धि भारतवासियों के आत्मविश्वास, आकांक्षाओं और अंतरराष्ट्रीय भूमिका को सशक्त करती है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विश्व दौरों की चर्चा प्राय: उनकी रणनीतिक कूटनीति, वैश्विक नेतृत्व और द्विपक्षीय समझौतों के संदर्भ में होती है, किंतु इन यात्राओं में एक और विशेष पक्ष होता है जो चुपचाप भारत की आत्मा को विश्व के सामने प्रस्तुत करता है– वह है उनके द्वारा चयनित सांस्कृतिक उपहार। हम आपको बता दें कि हर दौरे में प्रधानमंत्री मोदी जिन विशिष्ट हस्तशिल्पों, कलाकृतियों और प्रतीकों को उपहार स्वरूप ले जाते हैं, वे केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि भारत की समृद्ध परंपरा, बहुरंगी संस्कृति और आत्मनिर्भर कलात्मकता का परिचायक होते हैं। यह सांस्कृतिक कूटनीति भारत की सॉफ्ट पावर को सशक्त करने में निर्णायक भूमिका निभा रही है।

हम आपको बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी जिन वस्तुओं को विदेशी राष्ट्राध्यक्षों को भेंट करते हैं, वे भारत के अलग-अलग राज्यों, जनजातियों, परंपराओं और शिल्प कलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रधानमंत्री मोदी के उपहार केवल भारत की कलाओं का प्रदर्शन नहीं, बल्कि संवाद का माध्यम भी हैं। प्रधानमंत्री के उपहार दर्शाते हैं कि भारत केवल तकनीक और व्यापार का केंद्र नहीं, बल्कि हजारों वर्षों पुरानी सभ्यता का जीवंत प्रतिनिधि है। इन उपहारों के चर्चित होने से संबंधित हस्तशिल्प की मांग और मूल्य दोनों बढ़ते हैं। इसके अलावा, %मेक इन इंडिया और वोकल फॉर लोकल की नीतियों को सांस्कृतिक स्तर पर मजबूती मिलती है।

इसके साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब भी किसी देश की यात्रा पर जाते हैं, तो उनकी पहली प्राथमिकता होती है– वहाँ बसे भारतीय समुदाय से संवाद। यह मुलाकातें केवल भावनात्मक संबंधों का प्रदर्शन नहीं बल्कि नागरिक जुड़ाव का शक्तिशाली प्रतीक बन चुकी हैं। प्रवासी भारतीयों द्वारा अपने सांस्कृतिक प्रदर्शन, लोककला, संगीत और पारंपरिक वेशभूषा के माध्यम से जो दृश्य निर्मित होता है, वह विश्व के सामने भारत की एकता में विविधता और सजीव परंपरा का संदेश देता है।

प्रधानमंत्री मोदी जब इन समुदायों से मिलते हैं, तो वह यह स्पष्ट करते हैं कि वे भारत के गौरव के वाहक हैं, वे भारत और दुनिया के बीच सांस्कृतिक पुल हैं और वे भारत की सॉफ्ट पावर के सशक्त स्रोत हैं। प्रधानमंत्री मोदी की प्रत्येक विदेश यात्रा में भारतीय समुदाय द्वारा प्रस्तुत नृत्य, संगीत, भजन, पारंपरिक वेशभूषा में स्वागत, भाषणों में भारत माता की जय घोष, आदि केवल रस्म अदायगी नहीं होती, बल्कि ये दिखाते हैं कि भारत कहीं भी जाए, अपनी संस्कृति को जीवंत रखता है, भारत की परंपरा आधुनिकता के साथ सह-अस्तित्व में है और भारत की 'संवेदनशीलता' और 'संपर्क' की नीति भावनात्मक संबंधों पर आधारित है।

प्रधानमंत्री मोदी का भारतीय समुदाय से संवाद और प्रवासी भारतीयों का उनके समक्ष अपनी संस्कृति का प्रदर्शन, एक सशक्त और गहरा वैश्विक संदेश देता है कि भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि एक संस्कार, विचार और परंपरा है, जो सीमाओं से परे जाकर भी जीवित रहती है। यह %एक भारत, वैश्विक भारत% की संकल्पना को मजबूत करता है और दुनिया को बताता है कि भारत एक ऐसे राष्ट्र के रूप में उभर रहा है जिसकी मूल्य आधारित कूटनीति, संस्कृति आधारित संवाद और नागरिक भागीदारी आधारित पहचान है।

बहरहाल, इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय विदेश नीति को पारंपरिक निष्क्रियता से निकाल कर सक्रिय, निर्णायक और बहुआयामी कूटनीति का रूप दिया है। उनकी रणनीति केवल राजनयिक संवादों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने भारत को एक निर्णायक और आत्मविश्वासी राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है।

हिंदी विरोध के जरिए राष्ट्रीय मानस पर चोट

उमेश चतुर्वेदी

इसे राजनीतिक विद्रूप ही कहेंगे कि हिंदी को राजभाषा बनाने का विचार देने वाली मराठी माटी पर ही हिंदीभाषियों को अपमानित किया जा रहा है। महाराष्ट्र की धरती पर हिंदीभाषियों को अपमानित करने में राजनीति के दो चेहरे साफ नजर आ रहे हैं। एक तरफ अपमानित करने वाली शिवसेना और महाराष्ट्र नव निर्माण सेना यानी मनसे है तो दूसरी तरफ राज्य की सत्ता है। हिंदीभाषियों को अपमानित करने वाली राजनीति का मकसद हिंदी विरोध पर मराठी मानुष की अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए अपना वोट बैंक मजबूत करना है तो दूसरी तरफ सत्ता और विपक्ष के एक हिस्से की राजनीति है, जो अपमानित करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई इस डर से नहीं कर रही कि कहीं इससे मराठी मानुष की धारणा कमजोर ना हो जाए और उसके जरिए उसका अपना समर्थक आधार ना खिसक जाए। राजनीति की इस चक्करघिन्नी में निम्न मध्यवर्गीय या हाशिये वाला हिंदीभाषी समुदाय ही पिस रहा है। उसका अपराध यह है कि वह महाराष्ट्र में रहते हुए मराठी ना बोलकर हिंदी बोल रहा है। हिंदी बोलने के लिए हिंदीभाषियों को प्रताड़ित करने वाली राजनीति का अतीत भी ऐसा ही रहा है। शिवसेना का उभार पिछली सदी के साठ के आखिरी वर्षों में मुंबई में मलयालम बोलने वालों को खिलाफ आंदोलन के बाद हुआ। मनसे के कार्यकर्ता 2008-09 के दौरान तो केंद्रीय नौकरियों के लिए मुंबई में परीक्षाएं देने आए उत्तर भारतीय विशेषकर उत्तर प्रदेश-बिहार के छात्रों को को खुलेआम पिटते रहे। उस समय की राज्य सरकार ने इस बदसलूकी के खिलाफ प्रभावी कदम उठाने से बचती रही थी और आज की सरकार का भी कुछ वैसा ही रवैया है। मराठी मानुष का बोध महाराष्ट्र में इतना गहरा है कि सरकारें चाहें जिस भी दल की हो, इस मसले पर तकरीबन एक जैसा रूख अपनाने से परहेज नहीं करतीं।

भारत की संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने का विचार देने में महाराष्ट्र की हस्तियों का बड़ा योगदान रहा है। लोकमान्य तिलक ने बंग-भंग के वक्त 1905 में वाराणसी की यात्रा की थी। वहां उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जो कहा था, उसे महाराष्ट्र की हिंदीविरोधी राजनीति को जानना चाहिए। तिलक ने कहा था,

'निस्संदेह हिंदी ही देश की संपर्क और राजभाषा हो सकती है। लोकमान्य अकेले मराठी मानुष नहीं हैं, जिन्होंने हिंदी को लेकर यह विचार दिया। 1960 से पहले आज का गुजरात राज्य भी महाराष्ट्र का ही हिस्सा था। 1880 में गुजराती कवि नर्मदाशंकर दवे उर्फ नर्मद कवि ने लोकमान्य से करीब चौथाई सदी पहले हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में आगे लाने का सुझाव दिया था।

हिंदी को स्थापित करने की महात्मा गांधी की कोशिशों से भला कौन इनकार कर सकता है। 1918 में गांधी जी की अध्यक्षता में हुए इंदौर के हिंदी साहित्य सम्मेलन को हर हिंदीप्रेमी जानता है। लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि गांधी जी ने 1917 में भरूच में आयोजित गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में पहली सार्वजनिक तौर पर हिंदी की ताकत को स्वीकार किया था। उन्होंने कहा था, भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है। हिंदी के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम मानने वाले काका कालेलकर भी मराठी भाषी ही थे। सतारा में जन्मे कालेलकर ने 1938 में कहा था, 'राष्ट्रभाषा प्रचार हमारा राष्ट्रीय कर्म है।' रचनात्मक आंदोलनकारी और गांधी जी के शिष्य विनोबा भी ताजिंदगी हिंदी के संघर्षरत रहे। उन्होंने हर भारतीय भाषा को एक-दूसरे के करीब लाने के लिए अनूठा सुझाव दिया था। उन्होंने हर भाषा से नागरी लिपि अपनाने का सुझाव दिया था।

सिर्फ राजनीति ही नहीं, पत्रकारिता जगत की मराठीभाषी हस्तियों ने भी हिंदी को स्थापित करने में रचनात्मक भूमिका निभाई है और साहस दिखाया है। हिंदी पत्रकारिता आज जिस मुकाम पर है, उसमें बड़ा योगदान मराठीभाषी पत्रकारों और लेखकों का भी है। माधव राव सप्रे, बाबूराव विष्णुराव पराड़कर, रामकृष्ण खाडिलकर, लक्ष्मण नारायण गर्दे जैसे पत्रकारों ने हिंदी को नई शैली में गढ़ा, उसके शब्द गढ़े, और उसे ऊंचाई दी। हिंदी इन मराठीभाषी महात्मनों की शुक्रगुजार है। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई से निकले धर्मयुग ने दशकों तक हिंदीभाषी पाठकों के दिलों पर राज किया। ऐसे महाराष्ट्र की धरती पर अगर हिंदी बोलने वालों का अपमान होना दुखद ही कहा जाएगा।

हिंदी को लेकर महाराष्ट्र की धरती पर अतीत में ऐसी सोच नहीं रही है। हिंदी विरोध की ग्रंथि तमिलनाडु में आजादी के पहले से ही रही है, जिसका संक्रमण कर्नाटक तक पहुंचा है। कर्नाटक रक्षण वेदिके ने 2017 में हिंदी बेड़ा अभियान यानी हिंदी विरोधी अभियान चलाया। साल 2019 में हिंदी दिवस न मनाने के लिए भी राज्य में अभियान चला। शुरू में इन विरोध प्रदर्शनों को बड़ा समर्थन नहीं मिला। राजनीति और मीडिया के हलकों में इसकी सुरसुरी दिखी। ऐसे आंदोलनों का असर बाद में पता चलता है। जब विरोध की वैचारिकी के असर में जमीनी स्तर की सोच बदलने लगती है। एक राष्ट्रीयकृत बैंक की स्थानीय शाखा के प्रबंधक से जबरदस्ती हिंदी बोलने के लिए हुज्जत करने का दृश्य हो या फिर किसी ऑटोवाले का किसी हिंदीभाषी लड़की को थप्पड़ मारना, कर्नाटक में हिंदी विरोधी आंदोलन की जमीनी परिणति ही कहा जाएगा।

निजाम का शासन कर्नाटक के उत्तरी हिस्से में रहा। दिल्ली सल्तनत के बादशाह मोहम्मद तुगलक ने 1327 ईस्वी में दिल्ली से महाराष्ट्र के दौलताबाद में अपनी राजधानी लेकर गया था। जिसे आज का महाराष्ट्र देवगिरि के नाम से जानता है। उसके साथ भी हिंदी वहां तक पहुंची थी। महाराष्ट्र का विदर्भ इलाका राज्य पुनर्गठन से पहले मध्य प्रांत और बरार का हिस्सा रहा। इस वजह से विदर्भ भी मोटे तौर पर हिंदी के प्रभाव वाला राज्य है।

कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की बैठक सम्पन्न

रीवा का जीआई सुंदरजा आम पहली बार अबूधाबी होगा निर्यात

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विंध्य के रीवा में कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की बैठक होटल सेलिब्रेशन रीवा में संपन्न हुई। आयोजित बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में एपीडा प्राधिकरण के सदस्य होशंगाबाद नरसिंहपुर लोकसभा सांसद दर्शन सिंह चौधरी सम्मिलित हुए। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में एपीडा प्राधिकरण मुख्यालय नई दिल्ली से अधिकारियों एवं कृषि वैज्ञानिकों की उपस्थिति रही। बैठक में सुंदरजा आम जो मध्यप्रदेश के रीवा जिले का एक प्रसिद्ध जीआई (भौगोलिक संकेत) उत्पाद है। यह आम अपनी विशेष खुशबू, स्वाद और कम फाइबर और चीनी की मात्रा के लिए जाना जाता है, जो इसे मधुमेह रोगियों के लिए भी उपयुक्त बनाता है। वर्ष 2023 में इसे जीआई टैग मिला, जिससे इसकी पहचान और भी मजबूत हो गई है। विदेशों में सुंदरजा आम के निर्यात की संभावनाओं को लेकर यह बैठक रखी गई। बैठक में एपीडा के सदस्य सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने कहा कि रीवा में मिलने वाला खास आम सुंदरजा अपनी अनोखी मिठास और स्वाद के लिए देश के कोने-कोने में प्रसिद्ध है। जो अब विश्व में प्रसिद्ध होने जा रहा है। एपीडा ने रीवा के जीआई टैग सुंदरजा आम को पहली बार अबूधाबी यूएई को निर्यात किया है जो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का "आत्मनिर्भर कृषि और निर्यात वृद्धि" का विजन इसी तरह साकार होता दिख रहा है। यह हमारी मेहनत और गुणवत्ता का जीता-जागता सबूत है। यह पहल भारतीय आमों की विविधता और गुणवत्ता को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में स्थापित करने में एक बड़ा कदम है। इस अवसर पर आम की खेती करने वाले रीवा जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये किसानों ने जलवायु मिट्टी और आम की गुणवत्ता के विषय में अपनी जिज्ञासाओं से अवगत कराया। कार्यक्रम में सुंदरजा आम की देखभाल में ध्यान रखने वाली योग्य बातें एवं निर्यात करने के संबंध में जानकारी दी गई।

सतना में चार बच्चों को काटने के बाद डॉग की मौत

बच्चे जिला अस्पताल रेफर, ग्रामीण बोले- डॉग को बांधा, कुछ देर बाद उसने दम तोड़ा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के नागौद ब्लॉक में गुरुवार को एक स्ट्रीट डॉग ने चार बच्चों को काट लिया। परिजन बच्चों करे लेकर नागौद के सिविल अस्पताल गए, जहां उन्हें एंटी रैबीज इंजेक्शन लगाकर सतना रेफर किया गया। वहीं घटना के बाद स्ट्रीट डॉग की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार, ब्लॉक के श्यामनगर गांव में 6 वर्षीय सत्यम कोल, 10 वर्षीय जितेंद्र कुशवाहा, 8 वर्षीय रौनक चौधरी और 2 वर्षीय सिद्धू कोल घर के बाहर खेल रहे थे। परिजनों ने बताया कि इस दौरान सुबह करीब 8 बजे अचानक एक पागल स्ट्रीट डॉग ने एक के बाद एक चारों को काट लिया।

नागौद अस्पताल में बच्चों को एंटी रैबीज इंजेक्शन लगाया गया।

नागौद अस्पताल में बच्चों को एंटी रैबीज इंजेक्शन लगाया गया।

परिजन घायल बच्चों को तत्काल नागौद के सिविल अस्पताल ले गए। उनका आरोप था कि तुरंत मौके पर पहुंचने के बावजूद अस्पताल 11 बजे तक बंद रहा। इस कारण इलाज में तीन घंटे की देरी हुई। इसके बाद डॉक्टरों ने बच्चों को एंटी रैबीज इंजेक्शन लगाया।

घावों के बेहतर इलाज के लिए उन्हें सतना जिला अस्पताल रेफर किया गया। इसके बाद परिजन घायल सिद्धू और सत्यम कोल को लेकर शाम को सतना जिला अस्पताल पहुंचे। दोनों बच्चों को भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है। परिजनों ने बताया कि दोपहर में नागौद में बारिश होने की वजह से वे वही रुक गए थे।

इधर ग्रामीणों ने घटना के बाद स्ट्रीट डॉग को पकड़कर बांध दिया था। कुछ समय बाद उसकी मौत हो गई। इस घटना के बाद गांव में डर का माहौल है।

बीएमओ डॉक्टर प्रमोद प्रजापति ने बताया- चारों बच्चों को टिटनेस के अलावा एंटी रैबीज का डोज दे दिया गया है। कुत्ते के काटने से घाव गहरा था तो उन्हें सतना रेफर किया गया था।

जिला खनिज मद से 12.22 करोड़ की प्रस्तावित कार्ययोजना को दी गई मंजूरी

जिला खनिज मद से अधूरे आंगनवाड़ी केन्द्र भवनों तथा वृक्षारोपण के लिए राशि मंजूर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में जिला खनिज मद से 12 करोड़ 22 लाख रुपए के प्रस्तावित निर्माण कार्यों को मंजूरी दी गई। बैठक में पूर्व में मनरेगा के कन्वर्जेंस से अधूरे पड़े आंगनवाड़ी केन्द्र भवनों को पूरा कराने तथा वृक्षारोपण के लिए भी राशि मंजूर की गई। बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा कि जनप्रतिनिधियों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर कार्ययोजना तैयार की गई है। इसमें उच्च प्राथमिकता के कार्यों में 60 प्रतिशत तथा प्राथमिकता के कार्यों में 40 प्रतिशत का अनुपात रखा गया है। शासन द्वारा जारी नई गाइडलाइन के अनुसार प्रस्ताव तैयार किए गए हैं। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल व्यवस्था, अधोसंरचना विकास तथा दिव्यांगों के कल्याण के प्रस्ताव शामिल हैं। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 10-10 मोटराइज्ड तिपहिया साइकिल देने का भी प्रस्ताव रखा गया है।

बैठक में सांसद जनार्दन मिश्र ने कहा कि सबका उद्देश्य आमजनता का कल्याण करना है। सबकी सहमति से जिले के विकास से जुड़े कार्य खनिज मद से स्वीकृत किए जा रहे हैं। विधायक सेमरिया अभय मिश्रा ने स्कूल भवनों तथा छात्रावासों में सुधार के कार्य एवं दिव्यांगों को मोटराइज्ड तिपहिया साइकिल देने का सुझाव दिया। बैठक में सिरमौर के लिए एंबुलेंस एवं जनरेटर सेट की राशि मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को प्रदान करने तथा 47 अधूरे आंगनवाड़ी केन्द्रों के लिए एक करोड़ रुपए की राशि मंजूर की गई। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि जिला संयोजक आदिम जाति कल्याण विभाग छात्रावास भवनों में सुधार के कार्य विभागीय मद से प्रस्तावित करें। खनिज मद से आवंटित राशि का उपयोग करके कार्यपूर्णता प्रमाण पत्र प्रस्तुत करें। कार्यपालन यंत्री ग्रामीण यात्रिकी सेवा तथा अन्य निर्माण एजेंसियाँ शेष कार्य शीघ्र पूरा करें। बैठक में परियोजना अधिकारी जिला पंचायत संजय सिंह ने बताया कि योजना प्रारंभ से अब तक जिला खनिज मद से कुल 125 करोड़ सात लाख की कार्ययोजना अनुमोदित हुई है। इसमें से 116 करोड़ 57 लाख रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति जारी की जा चुकी है। इससे स्वीकृत 712 निर्माण कार्यों में से 225 पूरे हो गए हैं। 23 कार्य अलग-अलग कारणों से निरस्त कर दिए गए हैं। शेष जारी 464 कार्य इस वर्ष के अंत तक पूरे करा लिए जाएंगे। खनिज मद से मऊगंज जिले की राशि अब पृथक से जारी होगी। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, विधायक मनगवां इंजीनियर नरेन्द्र प्रजापति, विधायक प्रतिनिधि सिरमौर भूपेन्द्र सिंह, विधायक प्रतिनिधि गुढ़ ने कई उपयोगी सुझाव दिए। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर, समिति के सभी सदस्य तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

सतना में आकाशीय बिजली गिरने से महिला की मौत

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के उचेहरा थाना क्षेत्र के गोवराव कला गांव में गुरुवार को आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई, जबकि तीन महिलाएं घायल हो गईं। हादसा उस समय हुआ जब महिलाएं सिद्धनाथ मंदिर में गुरुपूर्णिमा के भंडारे में शामिल होकर लौट रही थीं और बारिश के चलते पेड़ के नीचे खड़ी थीं।

शाम करीब 3.30 बजे मंदिर परिसर से कुछ दूरी पर स्थित बरा के पेड़ पर बिजली गिरी, जिससे 57 वर्षीय बूटी बाई प्रजापति पत्नी राम केठन प्रजापति की मौके पर ही मौत हो गई। घायल महिलाओं में आरती प्रजापति की हालत गंभीर बताई गई है। उसे निजी वाहन से उचेहरा अस्पताल ले जाया गया। अन्य दो घायलों का इलाज परिजन अपने स्तर पर बिहटा गांव में करवा रहे हैं।

उंचेहरा अस्पताल में स्वीपर का पद रिक्त होने के कारण गुरुवार को शव का पोस्टमॉर्टम नहीं हो सका। इससे परिजन और पुलिस को काफी परेशानी उठानी पड़ी। अब पोस्टमॉर्टम शुक्रवार सुबह किया जाएगा।

कमिश्नर आज करेंगे राजस्व कार्यों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर बीएस जामोद संभागीय बैठक में 11 जुलाई को राजस्व कार्यों की समीक्षा करेंगे। बैठक दोपहर 12 बजे से कमिश्नर कार्यालय सभागार में आरंभ होगी। बैठक में आरसीएमएस पोर्टल में राजस्व प्रकरणों के निराकरण, दो वर्ष से अधिक समय से लंबित प्रकरणों के निराकरण, सीएम हेल्पलाइन, स्वामित्व योजना, फार्मर रजिस्ट्री, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, राजस्व वसूली, धारणाधिकार तथा भूअर्जन के प्रकरणों की समीक्षा की जाएगी। बैठक में बाढ़ से निपटने की तैयारियों, प्रतिबंधात्मक कार्यवाही, आबादी भूमि के चिन्हांकन तथा लैण्ड बैंक निर्माण की भी समीक्षा की जाएगी। बैठक में संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर तथा एसडीएम शामिल होंगे।

रीवा संभाग में अब तक 311 मिमी औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग में एक जून से अब तक 311 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। संभाग में 10 जुलाई को 19 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। सर्वाधिक 46 मिलीमीटर वर्षा मैहर जिले में दर्ज की गई। संभाग में एक जून से अब तक सर्वाधिक 505 मिलीमीटर वर्षा मऊगंज जिले में दर्ज की गई है। संभाग में इस अवधि में रीवा जिले में 171.6 मिलीमीटर, सतना में 253.6 मिलीमीटर, मैहर में 285 मिलीमीटर, सीधी में 356 मिलीमीटर तथा सिंगरौली जिले में 293.8 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है। गत वर्ष इसी अवधि में संभाग में 149 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई थी। संभाग की औसत सामान्य वार्षिक वर्षा 1090.3 मिलीमीटर है। संभाग में सिंचाई के प्रमुख स्त्रोत बाणसागर बांध में 10 जुलाई को सुबह 8 बजे तक जल स्तर 338.88 मीटर तक पहुंच गया है। गत वर्ष 10 जुलाई तक इसका जल स्तर 332.31 मीटर पर था।

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस पर किया मत्स्य पालकों को सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कृषि विज्ञान केंद्र रीवा में राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें रीवा एवं सतना जिले के मत्स्य पालक किसान सम्मिलित हुए। आयोजित कार्यक्रम में रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा तथा नर्मदापुरम सांसद दर्शन सिंह चौधरी शामिल हुए। इस अवसर पर उपस्थित लोगों से संवाद करते हुए सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने मत्स्य पालन क्षेत्र की प्रगति और मत्स्य पालन क्षेत्र में नए रुझानों, नियमों और उभरते अवसरों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सरकार ने मत्स्य पालकों को कृषि का दर्जा दिया है। उन्हें क्रेडिट कार्ड की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। मत्स्य पालकों के प्रयास न केवल लाखों लोगों की आजीविका को बनाए रखते हैं बल्कि राष्ट्र के स्थाई जलीय कृषि और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इस अवसर पर रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा ने कहा कि ग्रामीण रोजगार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले मत्स्य पालकों को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस मनाया जाता है। मछली पालन कम लागत में अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय है। जल गंगा संवर्धन अभियान में बनाए गए तालाबों से भी मछली पालन को प्रोत्साहन मिलेगा। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, किसान मोर्चा प्रदेश कार्य समिति के सदस्य पुष्पराज सिंह, किसान मोर्चा रीवा अध्यक्ष प्रशांत पाठक किसान मोर्चा सतना अध्यक्ष कृष्णा पांडे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सदस्य नीतिराज सिंह पटेल शैलेंद्र तिवारी, उप संचालक डॉ अंजना सिंह सहित कृषि वैज्ञानिकों तथा बड़ी संख्या में मछली पालक किसान उपस्थित रहे।

कमिश्नर आज करेंगे रेल परियोजना की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में 11 जुलाई को सुबह 11 बजे से आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ललितपुर-सिंगरौली रेलवे लाइन के सतना से सिंगरौली खण्ड के निर्माण कार्यों की समीक्षा करेंगे। बैठक में मुख्य वन संरक्षक, संबंधित जिलों के कलेक्टर तथा वनमण्डलाधिकारी एवं रेल परियोजना से जुड़े अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

निराश्रित गौवंशों को सड़कों से हटाकर भेजा जा रहा गौशाला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बारिश के समय सूखे स्थान की तलाश में बड़ी संख्या में निराश्रित गौवंश तथा अन्य पशु सड़कों पर डेरा जमा लेते हैं। इनके कारण एक ओर जहाँ आवागमन में बाधा होती है वहीं दूसरी ओर कई बार गंभीर सड़क दुर्घटना होने पर जनधन के साथ-साथ पशुओं की भी हानि होती है। इसे रोकने के लिए कलेक्टर प्रतिभा पाल ने सभी एसडीएम, मुख्य नगर पालिका अधिकारी, उप संचालक पशुपालन तथा निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। निराश्रित गौवंश को गौशालाओं में व्यवस्थित कराने के साथ-साथ गौवंश को निराश्रित छोड़ने वालों पर एक हजार का जुर्माना लगाने के भी निर्देश दिए गए हैं। इसके परिपालन में सिरमौर एसडीएम पीके पाण्डेय तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारी संतोष कुमार सिंह ने नगर परिषद सिरमौर के निराश्रित गौवंशों को हांका गैंग से पकड़वाकर गौशालाओं में भिजवाया। नगर परिषद अध्यक्ष संदीप सिंह तथा पार्षदगणों ने भी इस कार्य में सहयोग किया। सिरमौर नगर परिषद क्षेत्र के जयस्तंभ चौक, रीवा रोड, चचाई रोड, क्योटी रोड तथा शासकीय कार्यालयों के परिसर में विचरण कर रहे पशुओं को गौशाला तक पहुंचाया गया।

सड़कों से निराश्रित गौंवश को हटाने के अभियान के तहत नगर पंचायत बैकुंठपुर में मुख्य मार्गों से लगभग 50 गौवंश को हटाकर गौशालाओं में भेजा गया। गौशालाओं में इनके चारा, भूसा, पानी आदि की समुचित व्यवस्था की गई है। मनगवां में एसडीएम संजय जैन ने नगर परिषद के कर्मचारियों के सहयोग से गौवंश को हाईवे से हटाकर कृषि उपज मण्डी परिसर भिजवाया गया। इनके चारे और भूसे की व्यवस्था की गई। गौवंश को दुर्घटना से बचाने के लिए उनकी सींगो पर रेडियम टेप लगाए गए। जनपद पंचायत गंगेव के कर्मचारियों द्वारा प्रयागराज मार्ग में कलवारी मोड़ पर कई गौवंश को हाईवे से हटाकर गौशाला भेजा गया। साथ ही निराश्रित पशुओं के सींग में रेडियम टेप लगाए गए। नगर परिषद सेमरिया में भी मुख्य नगर पालिका अधिकारी ने नगर परिषद के कर्मचारियों के सहयोग से निराश्रित गौवंश को सड़कों से हटाकर गौशालाओं में सुरक्षित और व्यवस्थित कराया।

प्रशिक्षण देने के लिए व्याख्याताओं से 25 तक आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अनुसूचित जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र रीवा में प्रशिक्षण देने के लिए अतिथि व्याखाताओं से आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए हैं। इस संबंध में संस्था के प्राचार्य ने बताया कि प्रशिक्षण केन्द्र में अनुसूचित जाति तथा जनजाति के अभ्यर्थियों को राज्य सिविल सेवा परीक्षा, बैंकिंग, रेलवे, एसएससी तथा मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षण दिया जाना है। इन प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण देने के लिए योग्य एवं अनुभवी व्याख्याताओं से आगामी 25 जुलाई तक आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए हैं। निर्धारित अर्हता रखने वाले इच्छुक आवेदक अपने आवेदन पत्र शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव प्रमाण पत्रों की प्रमाणित छायाप्रति के साथ कार्यालयीन समय में कार्यालय में जमा कर सकते हैं। आवेदन पत्र केन्द्र के ईमेल पीईटीसीआईडब्ल्यूए एट द रेट जीमेल डॉट कॉम अथवा रजिस्टर्ड डाक से भी भेजा जा सकता है। प्राचार्य ने बताया कि आवेदक द्वारा आवेदन पत्र में अध्यापन किए जाने विषय एवं संबंधित प्रतियोगी परीक्षा का उल्लेख किया जाना आवश्यक है। आवेदक संबंधित विषय में प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की हो अथवा किसी प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान जहाँ से प्रशिक्षणार्थियों का चयन प्रतियोगी परीक्षाओं में होता रहा हो, में संकाय का सदस्य रहा हो। अतिथि व्याख्याताओं के चयन के लिए गठित समिति द्वारा व्याख्याताओं का पैनल तैयार किया जाएगा।

गुरू पूर्णिमा गुरू के प्रति आभार प्रकट करने का पावन पर्व

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। गुरू पूर्णिमा हिंदू धर्म में गुरु के सम्मान और उनके ज्ञान के प्रति आभार प्रकट करने का पावन पर्व है। यह दिन महर्षि वेदव्यास की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है, जिन्होंने वेदों का संकलन किया। यह पर्व आध्यात्मिक जागरूकता और आत्मिक उन्नति का प्रतीक है। गुरू पूर्णिमा न केवल एक धार्मिक पर्व है, बल्कि यह आध्यात्मिक साधना और आत्मचिंतन का भी अवसर होता है। यह पर्व गुरू और शिष्य के बीच विश्वास और समर्पण के अटूट बंधन को दर्शाता है। उक्त उदगार शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बदरॉव में गुरू पूर्णिमा उत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में संस्था के प्राचार्य आर के जैन ने व्यक्त किये।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य वक्ता व अतिथि रामरूप मिश्रा ने कहा कि गुरू पूर्णिमा केवल वेदव्यास जी का जन्मदिन नहीं, बल्कि जीवन में गुरू की भूमिका को समझने और उनका आभार व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण दिन है, जो हर किसी को ज्ञान, अनुशासन और आत्मिक प्रगति की ओर प्रेरित करता है ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यालय की माध्यमिक शिक्षक अदिति पाठक ने बताया कि मध्यप्रदेश शासन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के सभी शैक्षणिक संस्थानों व विद्यालयों में 9 एवं 10 जुलाई को गुरू पूर्णिमा उत्सव आयोजित किये जाने का कार्यक्रम जारी किया गया है।

जिसमे छात्र, छात्राओं की विशेष सहभागिता में छात्रों के मध्य निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी अनीता शर्मा, वरिष्ठ शिक्षक एम डी सिंह, भागवत प्रसाद पाण्डेय, अमरजीत पाण्डेय, प्रतिमा द्विवेदी ने छात्रों के मध्य अपने विचार रखे। कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन शिक्षक विद्यामणि शुक्ला द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जीत नारायण चतुर्वेदी, विजय पाल सिंह, शान्ति गुप्ता तथा विद्यालय के शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अगले कुछ महीने पृथ्वी तेजी से घूमेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। 9 जुलाई 2025, यानी आज का दिन सामान्य दिनों के मुकाबले 1.3 से 1.51 मिली सेकेंड पहले खत्म होगा। इसे इतिहास का सबसे छोटा दिन माना जा सकता है। 22 जुलाई और 5 अगस्त को भी चक्कर जल्दी खत्म होगा। इससे पहले 5 जुलाई 2024 को पृथ्वी ने 1.66 मिली सेकेंड पहले अपना चक्कर खत्म किया था। पृथ्वी 24 घंटे में पूरा एक चक्कर लगाती है। चंद्रमा पृथ्वी के रोटेशन (चक्कर लगाना) को प्रभावित कर रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, इन तीनों दिनों में चंद्रमा पृथ्वी के भूमध्य रेखा से सबसे दूर होगा और ध्रुवों के करीब होगा। जब चंद्रमा ऐसी जगह होता है, तो उसका खिंचाव पृथ्वी की घूमने की गति को तेज कर देता है। ठीक वैसे ही, जैसे कोई लट्टू ऊपर से पकड़े तो वो ज्यादा तेज घूमता है। चंद्रमा भी पृथ्वी को थोड़ा तेज घुमा रहा है।

अयोध्या में घर, वाराणसी में घाट डूबे

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूपीमें बुधवार को भारी बारिश जारी है। अयोध्या में घरों में पानी भर गया है। प्रयागराज में बारिश के पानी में डूबने से 4 बच्चों की मौत हो गई। वाराणसी में दशाश्वमेध घाट और अस्सी घाट तक पानी पहुंच गया है। इसके चलते गंगा आरती का स्थान बदला गया है। मध्य प्रदेश में नर्मदा उफान पर है। मंडला, डिंडौरी, श्योपुर, शहडोल, उमरिया जिले बाढ़ की चपेट में हैं। छतरपुर के बान सुजारा डैम के 12 गेट खोले गए, दमोह में सतधरू-साजली बांध के 3-3 गेट खोले गए। वहीं, जबलपुर में बरगी डैम के 17 गेट खोले गए हैं। महाराष्ट्र के नागपुर में लगातार हो रही तेज बारिश के चलते न्यू नरसाला इलाके में घर और गाड़ियां पानी में डूब गईं। हालात को देखते हुए नागपुर नगर निगम ने राफ्ट (नाव) की मदद से रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया है। उत्तराखंड में मानसून जमकर बरस रहा है। मंगलवार को चमोली जिले के नंदप्रयाग घाट के पास मुख गांव में बादल फटने से तबाही मच गई। स्थानीय ने बताया कि जनहानि की सूचना नहीं है। सर्च जारी है। अगले चार दिन राज्य के पांच जिलों में भारी बारिश की संभावना है।

मुंबई में शिवसेना विधायक ने कैंटीन कर्मचारी को पीटा

मुंबई (एजेंसी)। संजय गायकवाड़ बुलढ़ाणा सीट से शिवसेना विधायक हैं। अभी पार्टी की ओर से कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। शिवसेना (शिंदे गुट) विधायक संजय गायकवाड़ एक वीडियो में कैंटीन कर्मचारी को पीटते नजर आ रहे हैं। वीडियो मंगलवार रात को मुंबई के आकाशवाणी विधायक गेस्ट हाउस का है। विवाद खराब दाल परोसने से जुड़ा है। जब खराब क्वालिटी का खाना बुलढाणा विधायक गायकवाड़ को परोसा गया तो वे नाराज हो गए। गायकवाड़ कैंटीन में आए और स्टाफ की पिटाई कर दी। मामले को लेकर विधायक संजय गायकवाड़ ने बुधवार को कहा- वहां खाने की क्वालिटी अच्छी नहीं थी। मुझे अपने किए पर कोई पछतावा नहीं है।

कैपा निधि के अंतर्गत 1038 करोड़ रूपये के उपयोग की स्वीकृति

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक बुधवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रतिकरात्मक वन रोपण निधि (कैम्पा निधि) के लिए वर्ष 2025-26 की वार्षिक कार्य आयोजना में अनुमोदित कार्यों के क्रियान्वयन के लिए 1478 करोड़ 38 लाख में से 1038 करोड़ रूपये के उपयोग की स्वीकृति दी गयी। इस राशि का 80 प्रतिशत वन एवं वन्यप्राणी प्रबंधन एवं 20 प्रतिशत वन और वन्यजीव संबंधी अधोसंरचना के सुदृढीकरण पर व्यय किया जाता है। स्वीकृति अनुसार मध्यप्रदेश में विगत वर्षों के कार्यों के रख-रखाव, क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण, लैण्डस्केप के आधार पर बिगड़े वनों का सुधार, नदियों के पुनर्जीवन के लिए उनके जलग्रहण क्षेत्र के वनीकरण, मृदा एव जल संरक्षण के कार्य, ग्रामीणों की आजीविका के लिए ग्रामों की सीमा से लगे वनक्षेत्रों में बांस प्रजाति सहित वृक्षारोपण, वन्यप्राणी संरक्षित क्षेत्रों के गांवों से स्वैच्छिक विस्थापन, बफर क्षेत्र सहित संरक्षित क्षेत्रों में रहवास का विकास, नगर

वनों की स्थापना, वन एवं वन्यप्राणी संबंधी अधोसंरचना सुदृढीकरण और ग्रामीणों की क्षमता विकास से संबंधित कार्य किये जायेंगे। मंत्रि-परिषद द्वारा सक्षम आंगनबाड़ी एवं पोषण 2.0 योजना में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत 66 नवीन आंगनबाड़ी केन्द्रों की स्थापना, संचालन तथा भवन निर्माण की स्वीकृति दी गयी। स्वीकृति अनुसार 66 आंगनबाड़ी केन्द्रों के संचालन के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के 66 पद (मानसेवी), आंगनबाड़ी सहायिका के 66 पद (मानसेवी) तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों के पर्यवेक्षण के लिए पर्यवेक्षक के 02 पद नियमित शासकीय सेवक पद वेतनमान 25,300-80,500 के सृजन की स्वीकृति दी गयी।

वर्ष 2025-26 से 2028-29 तक योजना पर राशि का व्यय भारत सरकार द्वारा प्राप्त स्वीकृति के अनुसार किया जायेगा। उल्लेखित अवधि में योजना पर 15 करोड़ 21 लाख रूपये का व्यय अनुमानित है, जिसमें केन्द्रांश राशि 9 करोड़ 55 लाख रूपये एवं राज्यांश राशि 5 करोड़ 66 लाख रूपये है। मंत्रि-परिषद द्वारा लेक व्यू रेसीडेंसी होटल भोपाल को डिजाइन, निर्माण, वित्त, संचालन, हस्तांतरण के आधार पर जन-निजी भागीदारी के अंतर्गत होटल का विकास, संचालन एवं रखरखाव और प्रबंधन के लिए निजी निवेशक के पक्ष में मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम मध्यप्रदेश होटल कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा निष्पादित की जाने वाली लीज पर भारित पंजीयन व मुद्रांक शुल्क की प्रतिपूर्ति पर्यटन विभाग के विभागीय बजट से निजी निवेशक को किए जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है।

आतंकी तहव्वुर की ज्यूडिशियल कस्टडी 13 अगस्त तक बढ़ी

नई दिल्ली। दिल्ली की एनआईए कोर्ट ने 26/11 मुंबई हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा की ज्यूडिशियल कस्टडी 13 अगस्त तक बढ़ा दी है। वहीं, राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने बुधवार को राणा के खिलाफ सप्लीमेंट्री चार्जशीट दाखिल की है। कोर्ट 13 अगस्त को इस चार्जशीट पर सुनवाई करेगा। ये राणा के खिलाफ दूसरी चार्जशीट है। इससे पहले 2011 में पहली चार्जशीट दायर की गई थी। इसमें एनआईए ने राणा को डेविड हेडली और अन्य आतंकवादियों के साथ 26/11 हमले का साजिशकर्ता बताया था।

राजस्थान के चूरू में वायुसेना का जगुआर लड़ाकू विमान क्रैश

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के चूरू में भारतीय वायु सेना का जगुआर फाइटर जेट क्रैश हो गया है। इस हादसे में विमान के पायलट और को-पायलट शहीद हो गए हैं। जिस जगह प्लेन क्रैश हुआ, वहां बड़े इलाके में फाइटर जेट का मलबा बिखरा पड़ा है। यह हादसा बुधवार (9 जुलाई) को दोपहर 12 बजकर 40 मिनट पर हुआ। भारतीय वायु सेना ने दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के

लिए कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी गठित की है। चूरू एसपी जय यादव ने बताया- राजलदेसर थाना क्षेत्र के गांव भाणूदा में प्लेन क्रैश हुआ है। इसमें दो लोगों की मौत हुई है। मलबे के पास से बुरी तरह क्षत-विक्षत शव के टुकड़े मिले हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट बोला- संसद को निर्देश नहीं दे सकते

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने बुधवार को भारतीय न्याय संहिता के कुछ प्रावधानों को निरस्त करने की मांग वाली एक जनहित याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा कि न्यायपालिका के पास संसद को कोई कानून बनाने या निरस्त करने का निर्देश देने का अधिकार नहीं है। किसी कानून को खत्म करना हो तो वो सिर्फ संसद कर सकती है और वो भी कानून में बदलाव (संशोधन) करके। हम संसद को ऐसा करने का आदेश नहीं दे सकते, क्योंकि ये कानून बनाने जैसा काम होगा और वो हमारा काम नहीं है। याचिकाकर्ता का तर्क- लोगों को दबाने के लिए बनाई गई धाराएं याचिकाकर्ता उपेन्द्रनाथ दलई ने बीएनएस की धाराएं 147 से 158 और 189 से 197 को चुनौती दी थी। उनका कहना था कि ये धाराएं राज्य के खिलाफ अपराध और लोक शांति भंग करने से जुड़ी हैं, जो ब्रिटिश शासन के वक्त लोगों को दबाने के लिए बनाई गई थीं। दलई का तर्क था कि इन पुराने कानूनों को आज भी लागू रखना संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। याचिका में खास तौर पर बीएनएस की धारा 189 का जिक्र किया गया था, जो 'गैरकानूनी जमावड़े' से जुड़ी है।

शाह ने बताया रिटायरमेंट प्लान, कहा- प्राकृतिक खेती करूंगा

अहमदाबाद (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने बुधवार को अपना रिटायरमेंट प्लान बताया। उन्होंने कहा, मैं रिटायरमेंट के बाद अपना जीवन वेद, उपनिषद और प्राकृतिक खेती के लिए खर्च करूंगा। शाह ने कहा कि प्राकृतिक खेती एक ऐसा वैज्ञानिक प्रयोग है, जिससे कई तरह के फायदे हैं। शाह गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान की महिलाओं और सहकारी कार्यकर्ताओं के साथ बात कर रहे थे। इस कार्यक्रम का नाम

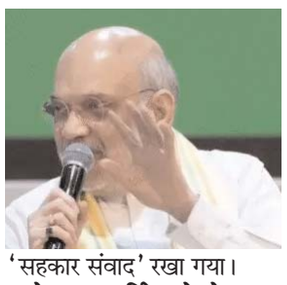

'सहकार संवाद' रखा गया।

नेचुरल फार्मिंग को लेकर शाह की 2 बड़ी बातें

1. प्राकृतिक खेती के लिए एक गाय ही काफी- जो प्राकृतिक खेती करते हैं, उनके खेत में केंचुए होते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरकता भी बनी रहती है। बारिश होने पर पानी भी खेत से बाहर नहीं जाता है। लोगों को ये मालूम होना चाहिए कि केंचुए किसी भी उर्वरक के बराबर काम करते हैं। प्राकृतिक खेती के लिए एक गाय ही काफी है। इसके गोबर से तैयार होने वाली खाद से आप 21 एकड़ की खेती कर सकते हैं।

2. केंद्र सरकार ने इसके लिए कोऑपरेटिव बनाया है- भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय ने प्राकृतिक खेती के अनाज को खरीदने के लिए कोऑपरेटिव बनाई है।

राहुल बोले- बिहार में भी चुनाव चोरी करने की कोशिश

पटना (एजेंसी)। राहुल गांधी बुधवार को पटना में महागठबंधन के प्रदर्शन में शामिल हुए। बिहार में वोटर लिस्ट की स्क्रीनिंग को लेकर विपक्षी पार्टियां विरोध कर रही हैं। यहां राहुल ने आरोप लगाया कि जैसे महाराष्ट्र का चुनाव चोरी किया गया था, वैसे ही बिहार के चुनाव को चोरी करने की कोशिश की जाएगी। उन्होंने कहा- इलेक्शन कमिश्नर भाजपा और आरएसएस नेताओं की तरह बात करते हैं। उन्हें (भाजपा) पता चल गया है कि हमने महाराष्ट्र मॉडल समझ लिया है, वे अब बिहार मॉडल लाए हैं। ये गरीबों का वोट

छीनने का तरीका है। राहुल ने कहा- आपको जो करना है करिए, लेकिन बाद में कानून आप पर हावी होगा। कानून आपको नहीं छोड़ेंगा। मैं आपको गारंटी दे रहा हूं कि आप कितने ही बड़े क्यों न हो कानून आपको नहीं छोड़ेगा।

वोटर लिस्ट में कोई गैर भारतीय नहीं रहेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार में मतदाता सूची की स्क्रीनिंग पर मचे राजनीतिक कोहराम के बीच चुनाव आयोग ने साफ किया है कि यह कवायद देश के हर राज्य में की जाएगी। इसमें घर-घर जाकर मतदाताओं की पुष्टि की जाएगी। इसके जरिए ईसीआई यह सुनिश्चित करना चाहता है कि कोई गैर भारतीय वोटर लिस्ट में न रहे। आयोग के सूत्रों ने बताया कि अगली बारी उन राज्यों की है जहां 2026 में विधानसभा चुनाव होने हैं। इनमें असम, पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु और पुदुचेरी शामिल हैं। बिहार में चुनाव के बाद इन राज्यों में अभियान चलाया जाएगा। इस कवायद की असली परीक्षा असम और पश्चिम बंगाल में होगी। यहां बांग्लादेशी घुसपैठियों की मौजूदगी पर पहले से राजनीति गरमाई हुई है। 2029 से पहले सभी राज्यों में स्क्रीनिंग करने का योजना अगले फेज में उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गोवा और मणिपुर का नंबर है। यहां 2027 में चुनाव हैं। सूत्रों ने बताया कि 2029 में लोकसभा चुनाव से पहले सभी राज्यों की वोटर लिस्ट की स्क्रीनिंग पूरी करने की योजना है। 2028-29 में 17 राज्यों के चुनाव हैं। वहीं, विपक्ष ने आयोग के फैसले पर सवाल उठाते हुए आंदोलन का ऐलान किया है। इस क्रम में बुधवार को बिहार में चक्का जाम होगा। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म (एडीआर) और विपक्षी पार्टियों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है।

वोटर वेरिफिकेशन के विरोध में महागठबंधन का बिहार बंद

पटना (एजेंसी)। बिहार में बुधवार को महागठबंधन ने चुनाव आयोग के वोटर वेरिफिकेशन के विरोध में बंद का आह्वान किया। इस दौरान 7 शहरों में ट्रेनें रोकीं गईं और 12 नेशनल हाईवे जाम किए गए। कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी विरोध में शामिल होने के लिए दिल्ली से पटना पहुंचे और यहां विरोध रैली में शामिल हुए। उनके साथ तेजस्वी यादव और वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी भी शामिल हुए। इनकम टैक्स चौराहे से राहुल गांधी, तेजस्वी यादव और दीपांकर भट्टाचार्य एक गाड़ी पर सवार होकर प्रदर्शन करते चुनाव आयोग के ऑफिस के लिए निकले। पुलिस ने सभी नेताओं को सचिवालय थाने के पास बैरिकेडिंग कर रोक दिया। उन्हें यहां से आगे जाने की परमिशन नहीं दी गई।

एमएनएस कार्यकर्ताओं ने हिंदी भाषी रिक्शा ड्राइवर से माफी मंगवाई

ठाणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में हिंदी भाषी रिक्शा ड्राइवर का एक मराठी पैसेंजर से किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। बात मारपीट तक पहुंच गई। इस विवाद में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना कार्यकर्ताओं ने दखल दिया। भिवंडी नगर अध्यक्ष मनोज गुलवी ने ड्राइवर को माफी मांगने पर मजबूर किया। गुलवी ने धमकी दी कि आगे अगर किसी किसी मराठी युवक को छूने की

कोशिश की, तो देख लेना हाथ कहां जाएगा। कुछ दिन पहले गुजराती दुकानदार से मारपीट हुई थी ठाणे में ही एमएनएस कार्यकर्ताओं ने गुजराती दुकानदार से मारपीट की थी। बहस दुकानदार के मराठी न बोलने पर हुई थी। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। वीडियो 30 जून का था।

कार्यकर्ता ने दुकानदार से कहा कि तुमने मुझसे पूछा कि मराठी क्यों बोलनी चाहिए? जब तुम्हें परेशानी थी, तब तुम एमएनएस ऑफिस आए थे। दुकानदार ने जवाब में कहा कि उसे नहीं पता था कि मराठी बोलना अब जरूरी हो गया है।

राज ठाकरे बोले-मराठी भाषा विवाद पर पार्टी सदस्य चुप्पी साधें

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में मराठी भाषा को लेकर विवाद के बीच महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना चीफ राज ठाकरे ने मंगलवार को ङ्क पर पोस्ट किया। उन्होंने पार्टी सदस्यों को पूरे विवाद पर चुप्पी साधने का निर्देश दिया। राज ठाकरे ने पोस्ट में लिखा कि, यह एक स्पष्ट आदेश है। पार्टी के किसी भी सदस्य को अखबारों, न्यूज चैनलों या किसी भी डिजिटल मीडिया से कोई बात नहीं करनी है। न ही अपनी प्रतिक्रिया वाले वीडियो सोशल मीडिया पर डालने हैं। ऐसा करना पूरी तरह से मना है। और जिन्हें मीडिया से बातचीत की आधिकारिक जिम्मेदारी दी गई है, वे भी मेरी अनुमति लिए बिना, मुझसे पूछे बिना किसी भी प्रकार के मीडिया से बात नहीं करेंगे और सोशल मीडिया पर भी कुछ व्यक्त नहीं करेंगे। मराठी को लेकर विवाद के बीच ठाणे के भायंदर में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने मंगलवार को प्रदर्शन किया था।

कोलकाता गैंग रेप,चारों आरोपी 14 दिन की न्यायिक हिरासत में

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के अलीपुर कोर्ट ने लॉ कॉलेज गैंगरेप मामले में चारों आरोपियों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। आरोपी मनोजीत पहले से 8 जुलाई तक न्यायिक हिरासत में था। इससे पहले 3 जुलाई को मामले में दाखिल तीन जनहित याचिकाओं की सुनवाई करते हुए बंगाल के सभी कॉलेज और यूनिवर्सिटी में छात्र संघ कार्यालयों को बंद करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने राज्य सरकार से जवाब मांगा है कि कॉलेज की गवर्निंग बॉडी को केस में शामिल क्यों नहीं किया गया। जस्टिस सौमेन सेन और जस्टिस स्मिता दास डे की बेंच ने कहा था कि छात्र चुनाव होने तक ये कमरे बंद रहेंगे। कोर्ट ने कहा कि ऐसे कमरों का इस्तेमाल किसी भी काम के लिए नहीं किया जा सकता है। जरूरत होने पर वैध कारणों के साथ यूनिवर्सिटी रजिस्ट्रार को आवेदन देना होगा। 25 जून को कसबा इलाके के साउथ कोलकाता लॉ कॉलेज में छात्रा के साथ गैंगरेप किया गया था। मामले में मुख्य आरोपी मनोजीत मिश्रा है। वहीं, प्रामित और जैब और पिनाकी पर उसे सपोर्ट करने का आरोप है। 2017 के बाद से पश्चिम बंगाल में कोई छात्र संघ चुनाव नहीं हुआ। फिर भी पूर्व छात्रों और गैर-निर्वाचित व्यक्ति संघ कार्यालय अवैध रूप से चला रहे हैं।

पुलिस ने बताया कि तीनों आरोपी अलग-अलग बयान दे रहे हैं, ताकि जांच को भटकाया जा सके। एक अधिकारी ने कहा कि तीनों लॉ स्टूडेंट हैं, इन्हें कुछ कानूनी चालें आती हैं। साथ ही पुलिस यह पता लगाने की कोशिश भी कर रही है कि मनोजित, जैब अहमद और प्रमीत मुखर्जी अपनी गिरफ्तारी से कुछ घंटे पहले किन-किन लोगों से मिले थे या किन लोगों के संपर्क में थे।

पुलिस ने कॉलेज की वाइस-प्रिंसिपल डॉ. नयना चटर्जी से भी दो बार पूछताछ की है। मनोजित मिश्रा ने उनसे 26 जून की सुबह फोन पर बात की थी। बुधवार को पुलिस ने उन 16 लोगों से भी पूछताछ की, जो घटना के वक्त कॉलेज परिसर में मौजूद थे।

गुजरात में पुल टूटा, चलती गाड़ियां नदी में गिरीं, 13 लोगों की मौत, 8 को बचाया

वडोदरा (एजेंसी)। गुजरात के वडोदरा में महिसागर नदी पर बना ब्रिज बुधवार सुबह टूट गया। हादसे के समय ब्रिज से गाड़ियां गुजर रही थीं। पुल टूटने पर दो ट्रक, दो कार और एक रिक्शा कुल पांच गाड़ियां नदी में गिर गईं। एक टैंकर टूटे सिरे पर फंस गया। हादसे में 13 लोगों की मौत हो गई, जबकि 8 को स्थानीय लोगों ने बचाया। दो लोग लापता हैं। फायर ब्रिगेड की तीन टीमें रेस्क्यू में जुटी हैं। 45 साल पुराना यह ब्रिज दक्षिण गुजरात को सौराष्ट्र से जोड़ता है। पुल टूट जाने से भरूच, सूरत, नवसारी, तापी और वलसाड जैसे दक्षिण गुजरात के शहरों से सौराष्ट्र पहुंचने में ज्यादा समय लगेगा। अब इसके लिए अहमदाबाद होते हुए लंबा रास्ता लेना पड़ेगा। हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताया है और (प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष) से मृतकों के परिजनों को ?2 लाख और घायलों को ?50,000 की आर्थिक मदद देने की घोषणा की है। हादसे के बाद तुरंत ही स्थानीय लोग मौके पर

पहुंचे और लोगों को रेस्क्यू किया। एक स्थानीय युवक ने बताया, हम सुबह से ही बचाव अभियान चला रहे हैं।

अब तक 13 शव बरामद हुए हैं, जिनमें से एक बच्चा है और एक बच्चा लापता है। इस दौरान हमें प्रशासन और अधिकारियों से कोई मदद नहीं मिली है। इनका कहना है कि 45 साल पुराने इस पुल की मरम्मत के लिए प्रशासन को कई बार सूचित किया जा चुका है। प्रशासन की तरफ से कोई कार्रवाई न किए जाने के कारण आज यह हादसा हुआ है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि इस हादसे के लिए पूरी तरह से प्रशासन ही जिम्मेदार है।

भारत के पहले बैटिंग हीरो हैं सुनील गावस्कर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट के %लिटिल मास्टर% सुनील गावस्कर आज यानी की 10 जुलाई को अपना 76वां जन्मदिन मना रहे हैं। वह विश्व के महानतम बल्लेबाजों में शुमार हैं। पूर्व कप्तान ने उस दौर में कई बेहतरीन और शानदार पारियां खेली। उस समय क्रिकेट के मैदान पर तेज गेंदबाजों का दबदबा हुआ करता था। लेकिन फिर भी सुनील गावस्कर को आउट करने में गेंदबाजों को पूरी ताकत झोंकनी पड़ जाती थी। तो आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर सुनील गावस्कर के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार

मुंबई में 10 जुलाई 1949 को सुनील गावस्कर का जन्म हुआ था। जन्म के बाद उनसे मिलने के लिए परिवार के कई लोग आए थे। जिसमें उनके काका भी शामिल थे। काका ने गावस्कर के कान के पास एक बर्थमार्क देखा था। लेकिन जब अगले दिन काका हॉस्पिटल पहुंचे, तो उन्होंने जिस बच्चे को गोद में उठाया उसके कान पर वह निशान नहीं था। इस पर काका परेशान हो गए और हंगामा कर दिया। फिर पूरे हॉस्पिटल के बच्चे चेक किए गए और गावस्कर मछुआरे की पत्नी के पास मिले।

बीसीसीआई जल्द करेगा फैसला, इंडिया-पाकिस्तान मैच को लेकर सरकार की अनुमति का इंतजार

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया कप क्रिकेट टूनामेंट सितंबर में खेले जाने की उम्मीद है लेकिन अभी भी इसे लेकर सस्पेंस बना हुआ है। बीसीसीआई पर काफी कुछ निर्भर करता है। भारत और पाकिस्तान के बीच रिश्ते अच्छे नहीं हैं और हाल ही में हुए पहलगाम हमले के बाद इसमें और कड़वाहट आ गई है। ऐसे में भारतीय क्रिकेट टीम का पाकिस्तान के खिलाफ मैच खेलना मुश्किल लग रहा है। बीसीसीआई ही एशिया कप की होस्ट है तो ऐसे में उन्हें ही फैसला लेना है। एशियाई क्रिकेट कार्उंसिल लगातार बीसीसीआई के ऊपर दबाव बना रहा है, लेकिन सरकार की अनुमति के बिना बीसीसीआई कोई फैसला नहीं लेने वाली है। हालांकि, 13 जुलाई तक इस पर तस्वीर साफ होने की उम्मीद है। भले ही बीसीसीआई इस टूर्नामेंट की होस्ट है लेकिन इसका आयोजन श्रीलंका या फिर यूएई में ही हो पाएगा। सितंबर ही एकमात्र ऐसा विंडो है जिसमें इस टूर्नामेंट का आयोजन हो सकता है क्योंकि इसके बाद इस टूर्नामेंट के लिए खाली समय नहीं मिलने वाला है। फिलहाल, भारतीय सरकार ने बीसीसीआई को इस टूर्नामेंट को लेकर कोई साफ संदेश नहीं दिया है। अगर सरकार की अनुमति नहीं होगी तो बीसीसीआई चाहकर भी इस टूर्नामेंट को लेकर आगे नहीं बढ़ सकती है।

फिलहाल, सबसे बड़ा मुद्दा ये है कि क्या भारतीय टीम पाकिस्तान के खिलाफ क्रिकेट मैच खेलना चाहती है या नहीं। वहीं एसीसी की कमाई का मुख्य जरिया एशिया कप ही है और यदि टूर्नामेंट नहीं हुआ तो उन्हें भारी नुकसान उठाना होगा। अगर टूर्नामेंट किसी तरह हुआ और भारत ने इसमें हिस्सा नहीं लिया तो भी उन्हें नुकसान ही उठाना होगा। टीवी प्रायोजक से लेकर हर कोई भारत-पाकिस्तान मैच के लिए ही विज्ञापनों में बड़ी रकम हासिल कर पाते हैं और इसी से बोर्ड को भी लाभ मिलता है।

कोहनी में चोट और शुरुआती दो सेट गंवाने के बाद क्वार्टर फाइनल में पहुंचे यानिक सिनर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दुनिया के नंबर वन टेनिस प्लेयर यानिक सिनर दो सेट गंवाने और कोहनी में चोट के बावजूद विंबलडन 2025 के पुरुष एकल के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने में कामयाब रहे। सिनर ने 19वें नंबर के खिलाड़ी दिमित्रोव को हराया है। हालांकि, वर्ल्ड के 19वें नंबर के खिलाड़ी दिमित्रोव ने सिनर के खिलाफ पहले दो सेट 6-3, 7-5 से जीत कर अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। लेकिन तीसरे सेट में जब स्कोर 2-2 से बराबरी पर था तब दिमित्रोव ने खेलना बंद कर दिया।

बता दें कि, 34 वर्षीय दिमित्रोव का ये लगातार पांचवां ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंच हैं जिसे वो पूरा करने में विफल रहे। वह जनवरी में ऑस्ट्रेलियाई ओपन और मई में फ्रेंच ओपन के अलावा पिछले साल विंबलडन और अमेरिकी ओफन में भी मैच के बीच में हट गए थे। सिनर पहले सेट के दौरान कोर्ट पर फिसल गए थे जिससे उनकी कोहनी में चोट आई थी लेकिन उन्होंने बाद में कहा कि चोट गंभीर नहीं है और चिंता की कोई बात नहीं है।

सिनर सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए अमेरिका के बेन शेल्टन से भिड़ेंगे। इस बीच महिला एकल में रूस की 18 वर्षीय खिलाड़ी मीर एंड्रीवा ने एम्मा नवारो को 6-2, 6-3 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई। वह पिछले 18 सालों में विंबलडन के महिला एकल के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी बन गई हैं।

स्कॉटलैंड को हराकर इटली ने किया बड़ा उलटफेर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इटली को टी20 वर्ल्ड कप 2026 का टिकट मिल सकता है। दरअसल, फुटबॉल और टेनिस के बाद इटली क्रिकेट की दुनिया में भी धीरे-धीरे अपना नाम बना हा है। इटली के अगले साल होने वाले टी20 वर्ल्ड कप में खेलने की उम्मीद उस समय जागी जब उनसे स्कॉटलैंड को हराया। बता दें कि, 2026 में भारत और श्रीलंका में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप में कुल 20 टीमें हिस्सा लेगी। 13 टीमों ने अभी तक इस मेगा आईसीसी टूर्नामेंट का टिकट हासिल कर लिया। 7 स्पॉट के लिए रेस अभी भी जारी है। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज जो बर्न्स की अगुवाई में इटली की जीत ने उन्हें आईसीसी टूर्नामेंट में पहली बार जगह बनाने के कगार पर ला खड़ा किया है बशर्ते वे शुक्रवार, 11 जुलाई को नीदरलैंड्स से मिलने वाली चुनौती को पार कर पाएं।

पिछले हफ्ते को जब यूरोपीय क्वालीफायर शुरू हुए थे, तब पांच टीमें अगले टी20 वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई करने की दौड़ में थीं। आखिरी दो दिनों, ग्वेर्नसे एकमात्र टीम है जो बाहर हो गई जबकि नीदरलैंड, इटली, स्कॉटलैंड और जर्सी के बीच कड़ी टक्कर है।

नोवाक जोकोविच ने रचा इतिहास, सेमीफाइनल में जगह बनाने के साथ फेडरर का रिकॉर्ड किया ध्वस्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। सर्बिया के टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच ने इटली के फ्लेवियो कोबोली को हराकर विंबलडन में रिकॉर्ड 14वीं बार सेमीफाइनल में जगह बनाई है। साथ ही वह आठवीं बार खिताब जीतने से महज एक कदम और करीब पहुंच गए हैं। नोवाक अभी तक 24 ग्रैंडस्लैम खिताब अपने नाम किए हैं, जिसमें 7 विंबलडन शामिल हैं। इसके साथ ही जोकोविच ने रोजर फेडरर का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है। बता दें कि, जोकोविच और फेडरर दोनों के नाम 13-13 बार विंबलडन के सेमीफाइनल में पहुंचने का रिकॉर्ड था। अब जोकोविच ने फेडरर को पछाड़ दिया है।

जहां नोवाक जोकोविच ने सबसे ज्यादा 14 बार (2007, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2018, 2019, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025) विंबलडन के सेमीफाइनल में जगह बनाई है। वहीं रोजर फेडरर ने 13 बार (2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2012, 2014, 2015, 2016, 2017, 2019) सेमीफाइनल में जगह बनाई थी। तो तीसरे नंबर पर जिमी कॉनर्स हैं जिन्होंने (1974, 1975, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1984, 1985, 1987) 11 बार सेमीफाइनल में पहुंचे थे।

क्वार्टर फाइनल में फ्लेवियो कोबोली ने पहला सेट जीतने में कामयाबी हासिल की लेकिन जोकोविच ने शानदार वापसी करते हुए मुकाबला अपने नाम किया। उन्होंने 6-7 (6), 6-2, 7-5, 6-4 से फ्लेवियो कोबोली को हराया। इससे पहले मुकाबले में भी जोकोविच ने कुछ इसी तरह से जीत अपने नाम की। उन्होंने आखिरी-16 के मुकाबले में एलेक्स डी मिनौर से पहला सेट हारने के बाद बेहतरीन वापसी करते हुए क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई थी। सेमीफाइनल में जब जोकोविच का मुकाबला 23 साल के जैनिक सिनर से होगा।

छठी रैंकिंग वाले जोकोविच ने जल्दी ब्रेक लेकर बढ़त बनाई, लेकिन कोबोली ने वापसी करते हुए स्कोर बराबर कर दिया और मुकाबला टाईब्रेक तक पहुंचा। टाईब्रेक में 23 वर्षीय कोबोली ने 3-1 की बढ़त ली और जोकोविच की वापसी के बाद स्कोर 6-6 होने पर भी सेट अपने नाम लिया।

दूसरे सेट में जोकोविच ने जोरदार वापसी की और दो बार कोबोली की सर्विस तोड़ते हुए आसानी से सेट जीत लिया और मैच बराबर कर दिया। तीसरा सेट काफी कड़ा रहा। लेकिन जोकोविच ने आखिर में एक अहम ब्रेक लेकर 7-5 से ये सेट भी अपने नाम कर लिया।

चौथे सेट में भी वही कहानी दोहराई गई। जोकोविच ने 5-4 की बढ़त बनाई थी और मैच जीतने के लिए सर्विस करने आए। उन्होंने 40-15 पर दो मैच पॉइंट हासिल किए, लेकिन कोबोली ने दोनों बचा लिए, एक तो उस वक्त जब जोकोविच कोर्ट पर फिसल गए थे। इसके बाद जोकोविच ने खुद को संभाला और आखिरकार मैच जीत लिया।

नोवाक जोकोविच ने मैच में 39 बेहतरीन शॉट लगाए, जबकि कोबोली ने 51 विनर्स मारे। जोकोविच की पहली सर्विस पर सफलता दर 75 प्रतिशत रही, यानी जब उन्होंने पहली सर्विस डाली, ज्यादातर बार उन्होंने पॉइंट जीता।

जमानत मिलने के बाद रेसलर सुशील कुमार रेलवे ड्यूटी पर लौटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दो बार के ओलंपिक मेडल विजेता रेसलर सुशील कुमार रेसलर सागर धनकर हत्या मामले में पिछले कई समय से न्यायिक हिरासत में थे। हाल ही में उन्हें कोर्ट ने जमानत दी थी, जिसके बाद वह आधिकारिक तौर पर उत्तर रेलवे में अपनी ड्यूटी फिर से लौट आए हैं। सूत्रों ने आईएएनएस को इसकी पुष्टि की है।

रेलवे सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि वर्तमान में उत्तर रेलवे में सीनियर कमर्शियल मैनेजर के पद पर नियुक्त सुशील कुमार फॉर्मल ड्रेस में नौकरी पर आए। अधिकारियों ने उनकी बहाली की पुष्टि करते हुए कहा कि ये प्रक्रिया सर्विस नियमों के अनुसार की गई।

सुशील कुमार साथी पहलवान सागर धनखड़ की हत्या के सिलसिले में 2021 में न्यायिक हिरासत में थे। दिल्ली हाई कोर्ट ने हाल ही में मुकदमे की प्रक्रिया में लंबी देरी का हवाला देते हुए पहलवान को जमानत दी थी। हालांकि, अभी सुशील कुमार की कानूनी लड़ाई खत्म नहीं हुई है, इसमें जांच जारी है।

बता दें कि, 42 वर्षीय सुशील कुमार ने अपने खेल के दम पर पूरे भारत में अपनी खास पहचान बनाई, उन्होंने 2012 लंदन ओलंपिक में रजत पदक और इससे पहले 2008 बीजिंग ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था।

यश दयाल ने यौन उत्पीड़न मामले में हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरसीबी के गेंदबाज यश दयाल ने अपने खिलाफ दर्ज यौन उत्पीड़न के मामले को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। गाजियाबाद के इंदिरापुरम थाने में उनके खिलाफ बीएनएस की धारा 69 के तहत दर्ज एफआईआर को रद्द कराने के लिए उन्होंने याचिका दाखिल की है।

यश दयाल के खिलाफ 6 जुलाई को गाजियाबाद के इंदिरापुरम थाने में एफआईआर दर्ज की गई थी। एफआईआर में एक महिला ने यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। इसके बाद मामले में तूल पकड़ लिया है और अब क्रिकेटर ने खुद को निर्दोष बताते हुए हाईकोर्ट में राहत की मांग की है।

अपनी याचिका में यश दयाल ने राज्य सरकार, इंदिरापुरम थाने के एसएचओ और शिकायतकर्ता महिला को प्रतिवादी बनाया है। याचिका पर डबल बेंच में जल्द सुनवाई होने की संभावना है। वहीं यश दयाल ने भी प्रयागराज के खुल्दाबाद थाने में महिला के खिलाफ ब्लैकमेलिंग के आरोप में शिकायत दर्ज करवाई है। उन्होंने अपने अधिवक्ता के माध्यम से थाने में तहरीर दी है, जिसमें उन्होंने कहा है कि महिला उन्हें झूठे केस में फंसाकर मानसिक रूप से प्रताड़ित कररही है और पैसे की मांग कर रही है।

यश दयाल ने अपनी तहरीर में ये भी आरोप लगाया है कि महिला ने उन्हें बदनाम करने की करियर खराब करने की धमकी दी थी। उन्होंने प्रयागराज पुलिस से मामले की निष्पक्ष जांच कर कार्रवाई की मांग की है।

दोनों पक्षों की ओर से कानूनी कार्रवाई के बीच अब ये मामला हाईकोर्ट के विचाराधीन है। कानूनी विशेषज्ञों की मानें तो बीएनएस की धारा 69 जो यौन उत्पीड़न से संबंधित है में कड़ी सजा और कठोर प्रावधान हैं, ऐसे में कोर्ट के आदेश का दोनों पक्षों पर बड़ा असर पड़ सकता है।

भारतीय महिला टीम ने खत्म किया 19 साल का सूखा, पहली बार इंग्लैंड को हराकर जीती टी20 सीरीज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने मैनचेस्टर में इतिहास रच दिया है। भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ पहली बार महिला टी20 सीरीज जीती है। भारत ने मैनेचेस्टर के एमिरेट्स ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर खेले गए मैच में इंग्लैंड को 6 विकेट से हराया। इसके साथ ही उसने 5 मैच की सीरीज में 3-1 की अजेय बढ़त बनाई और इतिहास रचा। सीरीज का अंतिम टी20 मैच शनिवार 12 जुलाई 2025 को बर्मिंघम में खेला जाएगा। इससे पहले भारत ने 2026 में डर्बी में खेले गए एकमात्र टी20 मैच में इंग्लैंड को हराया था। उसके बाद से भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू और विदेशी धरती पर खेली गई हर महिला टी20 सीरीज में हारती रही थी। इस तरह भारत ने 19 साल का सूखा खत्म किया।

भारत की बेहतरीन जीत में उसकी स्पिनर्स ने अहम भूमिका निभाई। जहां राधा यादव (2/15), श्री चरणी (2/30) और दीप्ति शर्मा (1/29) ने 5 विकेट लिए और मेजबान टीम को 20 ओवर में 7 विकेट पर 126 रन पर ही रोक दिया। इसके बाद सलामी बल्लेबाज शैफाली वर्मा (31रन) और स्मृति मंधाना (32 रन) ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए पहले विकेट के लिए 7 ओवर में 56 रन की साझेदारी करके जीत की नींव रखी। भारत ने 18गेंद शेष रहते 17 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 127 रन बनाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। राधा यादव प्लेयर ऑफ द मैच चुनी गई।

बुंदेली में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर शाला प्रवेश उत्सव और समाधान शिविर का हुआ भव्य आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले के विकासखंड मनेंद्रगढ़ के ग्राम पंचायत बुंदेली में गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हायर सेकेंड्री स्कूल बुंदेली के ग्राउंड में संकुल स्तरीय शाला प्रवेश उत्सव और समाधान शिविर का आयोजन बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ शासन के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत सदस्य रामजीत लकड़ा ने की। साथ ही जनपद सदस्य सुरेंद्र सिंह मरकाम, सरपंच श्रीमती हेमा रघुनाथ सिंह पोयाम, नगर पंचायत नई लेदरी के अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह राणा, विधायक प्रतिनिधि सरजू यादव, एसडीएम लिंगराज सिदार सहित बंजी और बुंदेली ग्राम पंचायतों के सरपंच-पंच, जनपद सदस्यगण, अन्य जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में ग्रामीणजन भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम की शुरुआत छत्तीसगढ़ महतारी और मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन से हुई। इसके पश्चात शाला में नवप्रवेशित विद्यार्थियों मिस्टी, उजयंती, शिवम, उमेश, सौम्या, आर्यन तिर्की, राजकुमारी, आशा, आशीष, रामलखन और पूनम देवी का तिलक कर पुष्पवर्षा एवं मिठाई वितरण कर आत्मीय स्वागत किया गया और उन्हें अध्ययन सामग्री, गणवेश व बैग वितरित किए गए।

टॉपर छात्र- छात्राओं को पुरस्कार देकर किया गया सम्मानित

वहीं शैक्षणिक सत्र 2024-25 में विभिन्न कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों कक्षा 5वीं से कु. रीता, मुक्तान सिंह, कुमारी ललिता, कुमारी खुशी, समन सिंह और कुमारी सोनी, कक्षा 8वीं से पूनम देवी, कुमारी सीता और सुषमा, कक्षा 10वीं से कुमारी संजना देवी और विनोद कुमार एवं कक्षा 12वीं से मुस्कान सिंह को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही आंगनबाड़ी केंद्र में नव प्रवेशी बच्चों का भी स्वागत-सम्मान किया गया।

शिविर में जाति प्रमाण पत्र तथा वनाधिकार पट्टा का किया वितरण

वहीं शाला प्रवेश उत्सव के साथ आयोजित समाधान शिविर में शिक्षा विभाग द्वारा 14 छात्र-छात्राओं को जाति प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कक्षा 6वीं में 22 और कक्षा 7वीं में 5 विद्यार्थियों ने नव प्रवेश लिया, जिनका पारंपरिक रूप से स्वागत हुआ। शिविर में वन विभाग द्वारा 34 पात्र हितग्राहियों को वन अधिकार पट्टा भी वितरित किया गया।

स्वास्थ्य मंत्री ने अनेक उदाहरणों से गुरु-शिष्य परंपरा को किया रेखांकित

कार्यक्रम में मंत्री जायसवाल ने कहा कि गुरु नहीं तो ज्ञान नहीं, और ज्ञान के बिना मानवता का कोई अस्तित्व नहीं। उन्होंने संत कबीर की अमर वाणी "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए" का उल्लेख करते हुए गुरु-शिष्य परंपरा की महत्ता बताई और कहा कि आज की युवा पीढ़ी को भारतीय मूल्यों और परंपराओं से जुड़ने को कहा है। उन्होंने ब्रिटिश काल की शिक्षा नीति की आलोचना करते हुए कहा कि लॉर्ड मैकाले की नीतियों ने हमारे महापुरुषों को इतिहास से हटाकर विदेशी आक्रांताओं का महिमामंडन किया। लेकिन आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लागू की गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत हमारे गौरवशाली नायकों जैसे चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, शिवाजी महाराज, अहिल्याबाई होलकर जैसे महान विभूतियों को शिक्षा के केंद्र में लाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि आत्मनिर्भरता, नवाचार और सांस्कृतिक जागरण की दिशा में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। मंत्री जायसवाल ने छत्तीसगढ़ के यशस्वी मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की भी भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में राज्य में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, जल, महिला सशक्तिकरण, किसानों की आयवृद्धि और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य हुए हैं। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री महतारी वंदन योजना के अंतर्गत महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रुपए की सहायता दी जा रही है, जिससे लाखों महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। स्वयं सहायता समूहों को ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है और किसानों से 3100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी की जा रही है, जो देश में सबसे ऊंची दर है। प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से गरीबों को पक्के मकान, नल-जल योजना से शुद्ध पेयजल, और मुख्यमंत्री हाट-बाजार क्लिनिक योजना व आयुष्मान भारत के तहत लाखों लोगों को निःशुल्क इलाज का लाभ मिल रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा यूनिफॉर्म, बैग, किताबें और छात्राओं को सरस्वती सायकिल योजना के अंतर्गत साइकिल प्रदान की जा रही हैं। मध्यान्ह भोजन योजना से लाखों बच्चों को प्रतिदिन पौष्टिक भोजन मिल रहा है। मंत्री ने यह भी कहा कि बंजी, बुंदेली और पाराडोल जैसी ग्रामीण सड़कों का कायाकल्प किया गया है और जहां पहले केवल कीचड़ और गड्ढे थे, वहां आज पक्की और सुगम सड़कें हैं। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि 2005 से पहले के भूमि कब्जाधारियों को पट्टा देने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। उन्होंने सभी ग्रामीणों से आग्रह किया कि वे अपनी मां के नाम से कम से कम एक फलदार पौधा अवश्य लगाएं और 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' के मंत्र को जीवन में अपनाएं। उन्होंने विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और समस्त ग्रामीणजनों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ तेज़ी से विकास की नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरुजनों का साल एवं श्रीफल देकर किया गया सम्मान

इस अवसर पर सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सामाजिक योगदान के लिए गुरु सम्मान समारोह में नवल दास मानिकपुरी (गायक), श्रीमती अनुसूइया मानिकपुरी (गायिका), शिवनाथ यादव (प्राध्यापक) और डॉ. विनोद पाण्डेय को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सुश्री बबीता सिंह, आनंद कुमार भगत, शिव दीवान, श्रवण सिंह, जगदीश सिंह, प्रमेश्वर सिंह, पन्नीलाल यादव, जयमंगल सिंह, सरकील यादव, शिव देवगन, मोहन, जयलाल करयाम, उदयभान, जगदीश प्रसाद, मोहन कुर्रे, रामसिंह, बेन सिंह, इंदु पटेल, विनोद गुप्ता, धीरेंद्र विश्वकर्मा और उमेश जायसवाल सहित सभी जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किया गया एवं आभार प्रदर्शन संस्था प्रमुख द्वारा किया गया।

एमसीबी जिले में अब तक 297.3 मि.मी. वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले में मानसून ने जोर पकड़ लिया है और लगातार हो रही बारिश से खेतों में हरियाली की उम्मीदें प्रबल हो गई हैं। भू-अभिलेख विभाग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, बीते 24 घंटे में जिले में औसत 1.5 मि.मी. बारिश दर्ज की गई है, जबकि भरतपुर तहसील में अब तक की सर्वाधिक 366.7 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है। 1 जून से 09 जुलाई 2025 तक जिले में कुल औसत 297.3 मि.मी. वर्षा भू-अभिलेख शाखा द्वारा दर्ज की गई है, जो खरीफ फसलों की बोआई के लिए अनुकूल मानी जा रही है। भू-अभिलेख शाखा के अनुसार, तहसीलवार वर्षा की बात करें तो मनेंद्रगढ़ में 246.1 मि.मी., खड़गवां में 295.9 मि.मी., चिरमिरी में 335.7 मि.मी., केल्हारी में 213.2 मि.मी., भरतपुर में 366.7 मि.मी. और कोटाडोल में 326.1 मि.मी. बारिश दर्ज की गई है ।

गुरुओं से मिले भाजपा नेता, मार्शल आर्ट ट्रेनर्स का महिला नेताओं ने किया सम्मान

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। रायपुर में भाजपा नेताओं ने गुरुपूर्णिमा पर खास कार्यक्रम किए। भाजपा ने हर मंडल में रहने वाले धार्मिक और शिक्षा में अपना योगदान देने वाले गुरुओं का सम्मान किया । भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव रायपुर पश्चिम के विधायक राजेश मूणत और जिला अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर ने रायपुर के रामकुंड स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर के महंत वेदप्रकाशाचार्य के पास जाकर उनका सम्मान किया।

कार्यक्रम के दौरान वहां उपस्थित कार्यकर्ताओं ने महंत पर पुष्पवर्षा की। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरणदेव ने कहा- " गुरु गोविंद दोनों खड़े काके लागू पाओ , गोविंद दियो बताए गुरु के लगे पाओ " अर्थात शिष्य के समक्ष गुरु और गोविंद दोनों खड़े हैं और वह शिष्य संशय में है कि किसके चरण पहले स्पर्श किया जाए और तभी गोविंद स्वयं कहते हैं कि प्रथम पूज्य गुरु हैं और गुरु के चरण स्पर्श किए जाए ।

उन्होंने आगे कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने सदैव भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को मजबूत करने का प्रयास धरातल तक पहुंचकर किया है और यह एक महत्वपूर्व वजह है जो भाजपा को अन्य राजनैतिक दलों से अलग और विशिष्ट बनाती है ।

भाजपा जिला अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर ने कहा कि गुरु पूर्णिमा पर्व पर गुरुओं का सम्मान कार्यक्रम भाजपा द्वारा मंडल स्तरीय तय किया गया था और हमने सभी 20 मंडलों पर विभिन्न स्थानों पर गुरुओं का सम्मान कार्यक्रम सफलत पूर्वक सम्पन्न किया यह हम सभी के लिए सौभाग्य का विषय है कि हमें पार्टी कार्यक्रम के माध्यम से गुरुओं का सान्निध्य और आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष शालिनी राजपूत के नेतृत्व में गुरुवार को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर छत्तीसगढ़ के हर जिले में गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत गुरुजनों के सम्मान हेतु कार्यक्रम रखा गया।

रायपुर में लक्ष्मी नारायण मंदिर के महंत वेद प्रकाश, दूधाधारी मठ के महंत रामसुंदर दास, महामंडलेश्वर यामिनी दीदी, विर@ानारायण मंदिर के पुजारी एवं साध्वी सौम्या सखी का तिलक, श्रीफल एवं शाल भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में महिला मोर्चा की प्रदेश उपाध्यक्ष द्वय ममता साहू व शीतल नायक, प्रदेश सह कोषाध्यक्ष संध्या तिवारी, मिनी पांडे, हारशिला रुपाली, प्रीति परगनिया, रायपुर जिला अध्यक्ष सीमा साहू, महामंत्री बंदना मुखर्जी, स्वप्निल मिश्रा एवं जिला एवं मंडल के पदाधिकारी मौजूद रहे।

भूपेश सरकार ने महिला समूहों से छीना था काम, साय ने दोबारा सौंपा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। भूपेश सरकार ने महिला समूहों से काम छीन लिया था, उसी काम को साय सरकार ने दोबारा सौंप दिया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने गुरुवार को रायगढ़ से रेडी टू ईट योजना की शुरुआत की। इस मौके पर उन्होंने 10 समूहों को रेडी टू ईट बनाने और बांटने का अनुबंध पत्र सौंपा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इन समूहों की बहनें अब आंगनबाड़ी के बच्चों को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने के साथ-साथ इस कार्य से अपनी आमदनी भी बढ़ाएंगी। जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त बन सकेंगी। सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक और गारंटी को पूरा कर दिया है।

वित्तमंत्री ओपी चौधरी ने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए लगातार काम कर रही है। पूरे देश में तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा गया है, उसके अनुरूप छत्तीसगढ़ सरकार योजनाबद्ध तरीके से काम कर रही है। इसी दिशा में रेडी टू ईट योजना प्रारंभ की जा रही है, जिसके प्रथम चरण में 6 जिलों को शामिल किया गया है।

सीएम ने कहा कि सरकार ने आंगनबाड़ी केंद्रों के लिए पूरक पोषण आहार के निर्माण एवं वितरण का काम महिला स्व-सहायता समूहों को सौंपने का निर्णय लिया है। यह काम प्रारंभिक चरण में 6 जिलों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में प्रारंभ किया जाएगा।

रायगढ़ इस पहल का पहला जिला बना है, जहां 10 महिला स्व-सहायता समूहों को अनुबंध पत्र वितरित किए गए हैं। यह योजना महिलाओं को स्वरोजगार के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में भी एक सार्थक पहल है।

यहां की समूहों का मिला काम : रायगढ़ की 10 महिला समूहों का चयन किया गया है। इन समूहों को रेडी टू ईट यूनिट की स्थापना हेतु प्रधानमंत्री फॉर्मेलाइजेशन ऑफ माइक्रो फूड प्रोसेसिंग एंटरप्राइज योजना के अंतर्गत उद्योग विभाग द्वारा सब्सिडी प्रदान की जाएगी।

रायगढ़ जिले की रायगढ़ शहरी, रायगढ़ ग्रामीण, पुसौर, खरसिया, घरघोड़ा, तमनार, लैलूंगा, मुकड़ेगा, धरमजयगढ़ एवं कापू परियोजनाओं के अंतर्गत आंगनबाड़ी केंद्रों में रेडी टू ईट वितरण हेतु महिला समूहों का चयन किया गया है।

महिला एवं बाल विकास विभाग की टीम ने मारा छापा

एमपी-यूपी के मजदूरों को बंधक बनाकर 4-5 माह से करवा रहे थे काम, खरोरा से बच्चे समेत 97 को छुड़ाया

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। जिले के खरोरा स्थित एक मशरूम कंपनी से बड़ी संख्या में महिला-पुरुष व बच्चों को महिला बाल विकास विभाग ने रेस्क्यू किया है। कंपनी के संचालकों ने इन मजदूरों को 4-5 माह से बंधक बनाकर रखा था। उन्हें मजदूरी भी नहीं दे रहे थे ना ही उन्हें घर जाने दे रहे थे। बीते दिनों कुछ मजदूर वहां से किसी तरह बाहर निकले और शिकायत की।

शिकायत पर महिला बाल विकास विभाग ने कुल 97 लोगों को कंपनी से रेस्क्यू किया। सभी को बूढ़ापारा के इंडोर स्टेडियम में लाकर रखा गया। इसके बाद मजदूरी के पैसे दिलवाकर उन्हें वापस घर रवाना किया गया। फिलहाल इस मामले में कंपनी संचालक के खिलाफ आगे की कार्रवाई जारी है।

महिला बाल विकास विभाग रायपुर डीपीओ शैल ठाकुर ने बताया कि, खरोरा स्थित उमाश्री राइस मिल के अंदर मोजो मशरूम फैक्ट्री संचालित है। हमें सूचना मिली थी कि यहां यूपी और एमपी के कुछ मजदूरों को बंधक बनाकर रखा गया है। टीम ने पुलिस की मदद से वहां छापा मारा।

देखा कि वहां सैकडों मजदूर अपने बच्चों के साथ दयनीय स्थिति में रह रहे थे। सभी को रेस्क्यू कर इंडोर स्टेडियम में लाया गया। कंपनी के संचालकों को भी यहां बुलाकर उनसे मजदूरों के पैसे दिलाए गए। सभी मजदूरों को उनके घर भेज दिया जाएगा।

छुड़ाए गए मजदूरों की आपबीती... जौनपुर से आई सीता ने बताया कि, वह 4-5 माह पहले जौनपुर से काम करने आई थी। लेकिन यहां 24 घंटे सिर्फ उनसे काम करवाया जाता था। थककर कुछ देर बैठ जाओ तो संचालक आकर मारपीट करते थे। पैसे मांगे तो गाली गलौच देकर भगा देते थे। जौनपुर के सोनू ने बताया कि हमें बताया कुछ और गया था, लाकर यहां कुछ और ही काम करवा रहे थे। 1 बार खाना देते थे। समय निकल गया तो वो भी नसीब नहीं होता था। हमसे जानवरों जैसा बरताव किया जाता था। पैसे मांग लो तो मारपीट और गाली गलौच करते थे। काजल ने बताया कि, एक टाइम खाना देते थे और सभी से किसी भी समय उठाकर काम करवाते थे। काम ना करो तो कंपनी के मालिक डंडों और बेल्ट से मारते थे। मेरे साथ मेरी मां, भाई और बच्चे भी हैं, उनके सामने मारपीट करते थे।

कंपनी में ही काम करने वाले जौनपुर निवासी रवि ने रायपुर एसएसपी से इसकी शिकायत की थी। रवि ने शिकायत में बताया था कि, वह करीब 1 माह से उस फैक्ट्री में काम कर रहा है। जौनपुर निवासी विपिन तिवारी, विकास तिवारी और नितेश तिवारी जो अपने आप को मशरूम कंपनी के संचालक कहते थे, उन्होंने गोलू, उसकी बहन समेत 8 लोगों को यह बोलकर लाया था कि यहां ज्यादा मेहनत वाला काम नहीं है, सिर्फ खाना बनाना है और घरेलू काम करना है।

जब वे कंपनी पहुंचे तो उनसे कभी भी किसी भी समय मशरूम लगाने, काटने, सामान उठवाने, मशीन चलवाने आदि बेहद कठिन काम करवाता था। रात को नहीं उठते तो उनसे मारपीट की जाती थी। सभी का मोबाइल और पहचान पत्र आदि भी छीन लिया गया था। काम के बाद पैसे की मांग की जाती थी तो मारपीट करने लगते थे।

2 जुलाई को किसी तरह बचकर भागे और जैसे तैसे पुलिस के पास पहुंचे। रवि ने बताया कि, उसकी बहन लक्ष्मीना, रिनका, सीमा, बबलू, सुनील और दो अबोध बच्चों समेत अन्य कई लोगों को वहां बंधक बनाकर रखा गया है।

बोल बम जत्था बाबा धाम के लिए रवाना

मीडिया ऑडीटर, पांडुका (निप्र)। पांडुका 7 ग्राम पोंड (पाण्डुका) से बोल बम समिति बाबा वैध नाथ देवघर के लिए निकले सर्वे भवन्तु सुखीना विश्व शांति के उद्देश्य लेकर सुल्तान गंज बिहार से जल लेकर देवघर झारखंड 110कि.मी. यात्रा के लिए गुरुवार से निकलेंगे तीन दिन की यात्रा पश्चात बाबा घाम पहुंचेंगे जिसमें गांव के राजेंद्र, तुलाराम, मनीराम, गोपी, दानू, पूर्णाचंद, इतवारी डेमन, ठाकुरराम, समीर, कुलेश्वर, नेपाल, पोखराम, रेमन, अंगद, प्रदीप, एकलव्य, बोहरण, भूपू, गैंदलाल, गुलशन, 25 सदस्यीय टीम रवाना हुए।

रायपुर में व्यापारी का मोबाइल चुराकर खाते से निकाले पैसे

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। रायपुर में कारोबारी का मोबाइल चुराकर खाते से रुपए निकालने का मामला सामने आया है। जब व्यापारी घर के लिए सब्जी ले रहा था। तभी आरोपी ने मोबाइल चोरी कर लिया। फिर व्यापारी के दो अलग-अलग बैंक से के माध्यम से 1 लाख 85 हजार रुपए ट्रांसफर कर लिए। मामला तेलीबांधा थाना क्षेत्र का है।

तेलीबांधा पुलिस के मुताबिक, गोविंद राम वाधवानी ने थाने में शिकायत दी। जिसमें बताया कि वो बर्फ फैक्ट्री का संचालन करता है। 22 जून को सुबह 9 बजे वह सब्जी लेने के लिए तेलीबांधा आया था। इस दौरान पड़ोस में एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया। उसने जेब में रखे मोबाइल को झपट्टा मार कर चोरी कर भाग गया।

गोविंद रामजी बैंक पहुंचा तो उनके बैंक से ?85000 रुपए और पंजाब एंड सिंध बैंक के खाते से 1 लाख पार हो गया। जिसकी जानकारी अगले दिन उसे बैंक जाकर पता चली। इस मामले में उसने तेलीबांधा पुलिस में शिकायत दी है। इसके बाद पुलिस बैंकिंग ट्रांजेक्शन के माध्यम से आरोपी की तलाश में जुट गई है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक / प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा विप्र एक्सप्रे प्रेस सीपत रोड सरकंडा बिलासपुर छत्तीसगढ़ से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय वार्ड 14 हल्दीबाड़ी एमसीबी छत्तीसगढ़ से प्रकाशित, संपादक-संदीप द्विवेदी
आर .एन .आई नं . सी टी एच आई एन /25/ए 1478 फोन नं .7974467831,9589645803,mediaauditor1@gmail .com पीआइबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार , सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा